RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 11 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका जुलाई 2019

मिस इंडिया सुमन राव

पेज संख्या : 36 राजसमंद

राकेश पूर्व जन्म की पत्नी केसर के साथ

पुनर्जन्म की एक सच्ची घटना

चांदी की माइंस से चमक उठा रेलमगरा, बना व्यापार का केंद्र

SiTE Technical Education
An ISO 9001:2015 Certified Institute

MCA BCA PGDCA DCA TALLY MSW MA BA
MBA BCOM B.Sc M.Sc D. Lib. B.Lib. MCOM BBA
BSW LLB LLM DLL DCL DMLT CMLT BSTC
DIPLOMA IN YOGA & NATUROPATHY
B. PHARMA
नौकरी के साथ डिग्री
D. PHARMA
DIPLOMA IN FIRE SAFETY
ITI Electrician, Fitter, Civil
B. Tech. & Polytechnic DIPLOMA Ele., Mining, E&C, Civil, Chemical & More
वादे सभी करते हैं लेकिन हम निभाते हैं।
संजय कम्प्यूटर्स
चामुण्डा माता मंदिर के पास, रेलमगरा, जिला-राजसमंद
मो. 02952-267687, 9828827326

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

ग्राम पंचायत रेलमगरा
पंचायत समिति रेलमगरा, जिला–राजसमंद

श्रीमती निशा जाट
सरपंच

लादुलाल गाडरी
उपसरपंच

किशनलाल जाट
ग्राम विकास अधिकारी

-: वार्डपंच :-

रामी गाडरी, संतोष नायक, मीना शर्मा, मुकेशचन्द्र नायक, कमला बाई प्रजापत, विष्णु शंकर जाट, शबीर हुसैन छींपा, मोहम्मद सिराज, मदनलाल धोबी, विजया पारीक, रघुनाथ जाट, गीता रेगर, कमला देवी तेली, श्यामलाल कुम्हार, अनिता देवी शर्मा, मोहनलाल शर्मा एवं समस्त ग्रामवासी

ग्रामवासियों से अपील

▸▸ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ▸▸ कागज, प्लास्टिक की बोतलें, धातु के डिब्बे, कांच आदि अलग-अलग फेंके। ▸▸ सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फेंके। ▸▸ सार्वजनिक स्थलों पर थूकें नहीं। ▸▸ अपने पालतू जानवरों को सार्वजनिक स्थल पर गन्दगी न फैलाने दें। ▸▸ इमारत की सीढियां, लिफ्ट, बरामदा आदि में गंदगी न फैलाएं। ▸▸ नालियों व सीवरेज को ब्लॉक न करें, न ही प्रशासन की अनुमति के बिना इनमें फेर बदल करें। ▸▸ निर्माण स्थलों पर या आसपास कचरा जमा होने की स्थिति में तुरंत प्रशासन को सूचित करें।

सम्पादकीय

अंग्रेजी पढ़ाने की भागदौड़

नवीन शिक्षा सत्र प्रारम्भ हो चुका है और अभिभावक इस भागदौड़ में लग गए है कि उनके बच्चों को कौनसे माध्यम में दाख़िला दिलवाएं– हिन्दी या अंग्रेज़ी ?

वर्तमान में यह विषय अभिभावकों के लिए किसी विश्व युद्ध के परिणामों से भी अधिक महत्व रखता है। अधिकतर अभिभावक केवल इसी भागमभाग में लगे है कि अपने बच्चों को किसी अच्छे निजी अंग्रेजी माध्यम के **'स्कूल'** में दाख़िला दिलवाएं। यहां मैंने स्कूल शब्द का प्रयोग इसलिए किया, क्योंकि हमनें **गुरुकुल और विद्यालय** जैसे शब्दों को प्रयोग में लाना ही छोड़ दिया है । इसे कुछ इस तरह भी व्यक्त किया जा सकता है कि हम हमारे पौराणिक शब्दों को एजिन को प्रयोग में लाने मात्र से भाषा अलंकृत हो जाती है, प्रयोग में लाना ही नहीं चाहते।

खै़र, मुद्दा यह है कि आखि़र बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ाने की इतनी ज़द्दोज़हद क्यों ? इसका विश्लेषण किया तो पाया कि हम सब बाहरी चकाचौंध और देखादेखी में इस प्रकार के निर्णय लेने लगते हैं। इन सबके बीच हम कहीं न कहीं बच्चों को हमारी मातृभाषा से दूर कर रहे हैं और इस बाहरी चकाचौंध में इतना विलीन हो गए है कि हम शनैः शनैः अंग्रेज़ी भाषा को अपनी मातृभाषा के रूप में स्थापित करने की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

कहते हैं कि अंग्रेजी भाषा 'A' से शुरू होकर 'Z' से ज़ेबरा बनाती है और हिन्दी 'अ' से शुरू होकर 'ज्ञ' से ज्ञानी बनाती है । वर्तमान स्थिति इस कहावत को चरितार्थ कर रही है । इस लेख का इरादा अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों की बुराई करना कतई नहीं है, लेकिन एक सच की अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय भारी भरकम कमाई के ज़रिये बन गए हैं। देखादेखी में कई अभिभावक जो अपने बच्चों को इन विद्यालयों में पढ़ाने में ज्यादा सक्षम नहीं है, वो भी इन विद्यालयों में अपने बच्चों का दाखिला करवा रहे हैं। इस बड़ी फीस की अदायगी करके वे धन की बर्बादी भी कर रहे हैं और अपने ऊपर कर्ज़ भी बढ़ा रहे हैं।

इस तथ्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में बच्चे समझने के बजाय रटन विद्या पर ज़्यादा ज़ोर दे रहे हैं। हिन्दी हमारी मातृभाषा है और हमें इसका सम्मान करना होगा। यह भाषा किसी के ऊपर थोपी नहीं जा रही है, लेकिन यह हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी ज़रूरी है, लेकिन यह हमारी पहली प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए। **अभिभावकों से आग्रह है** कि वे अपने बच्चों पर ज़बरन अंग्रेजी भाषा ना थोपे और उन्हें हिंदी भाषा का महत्त्व बताएं और बाहरी चकाचौंध और देखादेखी में अपने बच्चों के भविष्य को अंधकार में ना डालें।

अतिथि सम्पादक

विजय पालीवाल
कांकरोली

सामाजिक अभिरुचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी	सूर्यप्रकाश दीक्षित, हेमेन्द्रसिंह
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, सुधीर दवे नरेश पालीवाल

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला–राजसमंद, 9414239648, 9950084705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** पुनर्जन्म की एक सच्ची घटना — पेज –4
2. **माटी का लाल :** राजसमंद के संगीत गुरु श्री देवीलाल शर्मा — पेज – 8
3. **व्यंग्य :** चतुराई काम न आई — पेज –12
4. **राइजिंग अवेयरनेस** — पेज– 13
5. **मेरा गांव, मेरे लोग :** सम्पत चोरड़िया व दोला बा — पेज – 14
6. **ग्राम यात्रा :** रेलमगरा — पेज – 16
7. **व्यंग्य :** भिखारियों की जमात — पेज – 24
8. **कविताएं :** कोरा आसमान व वीर प्रताप — पेज – 26
9. **व्यंग्य :** आम से खास गुफ्तगू — पेज – 28
10. **चिंतन :** इंसान से ज्यादा प्रिय हुए मोबाइल — पेज – 29
11. **तीखी मिर्ची :** जनम दुखियारा राहुल — पेज – 31
12. **गुमनाम शख्सियत :** घर बेच बनवा दी धर्मशाला — पेज –32
13. **मेवाड़ी चौपाल :** खेखरो कुटाई देतो — पेज –34

पुनर्जन्म की एक सच्ची घटना

टोंक के विट्ठलदास सुथार ने कांकरोली में लिया राकेश गौड़ के रूप में नया जन्म

जब 4 वर्षीय राकेश ने अपने पूर्व जन्म की बातें बताई, तो सभी चकित रह गए। राकेश की जिद पर पिता जब पूर्व जन्म स्थल ले गए, तो उसने अपना घर, अपनी पत्नी, बच्चों को पहचान लिया और फिर जिद करने लगा कि अब वह पत्नी और बच्चों को अपने साथ ही रखेगा। यह सुनकर सभी हैरान रह गए।

राकेश पूर्व जन्म की पत्नी केसर के साथ

पिताजी जब बच्चों को बता रहे थे कि हम पहले मेड़ता सिटी में रहते थे। यह सुनते ही 3 साल का बालक तपाक से बोला– मैं तो पहले टोंक में रहता था। यह बात सुनकर अन्य बच्चे हंस पड़े। पिताजी को भी हंसना आ गया। अब पिताजी बोले– टोंक और कौन कौन रहते हैं ? इस पर बच्चे ने कहा– हां टोंक में मेरी पत्नी और मेरे बच्चे भी है। बच्चों की इस बात को पिताजी ने भी हंसी–ठिठोली में निकाल दी।

वर्ष 1973 में जब रात को तेज बारिश हुई और उसी वर्ष लबालब होकर छलकी थी। उस रात तेज बारिश के कारण छत टपक रही थी, तब कोने में थोड़ी सी सुखी जगह पर मां के साथ राकेश सो रहा था, तभी आधी रात में यकायक राकेश उठबैठा और कुछ बड़बड़ाने लगा– उफ ! इस बारिश में मेरे बच्चों का क्या हाल हो रहा होगा। अकेली केसर कैसे उन्हें संभाल रही होगी। कच्चा मकान और पास में नाला भी बहता है। राकेश की यह बात सुनकर मां भी चौंक गई और बोली– क्या हुआ बेटा, किससे बात कर रहा है ? बच्चा जब कुछ नहीं बोला, तो मां बोली– सपना आया होगा, कोई बात नहीं सो जा बेटा।

फिर एक दिन सुबह सुबह कांकरोली चौपाटी पर एक बस आकर रूकी, जिसके यात्री श्री द्वारकाधीश मंदिर में दर्शन के लिए चले गए थे। बस ड्राइवर चौपाटी पर पान की दुकान पर पहुंचा और गुटखा खरीदने लगा। तभी उसके कान में एक आवाज पड़ी, ए छीतर ! ड्राइवर इधर उधर देखने लगा, तभी दूसरी आवाज ए छीतर ! यहां नीचे देख, नीचे। ड्राइवर ने देखा एक 4 साल का बच्चा उसे नाम से आवाज दे रहा है, तो चौंक पड़ा। फिर ड्राइवर बोला– तू मुझे कैसे जानता है ? इस पर बच्चे ने कहा– तू टोंक से कैसे आया ? ड्राइवर बोला– मैं तो यहां बस लेकर आया हूं, मगर बता तू मुझे कैसे जानता है ? तो बच्चे ने कहा– तुझे बस चलाना किसने सिखाया ? ड्राइवर बोला– मुझे तो मेरे उस्ताद विट्ठलदास ने सिखाया। तो बच्चे ने कहा– वो उस्ताद मैं ही हूं विट्ठलदास और मेरे घर बोल देना, मैं जल्दी ही टोंक आ जाऊंगा। यह बोलते–बोलते बच्चा घर की तरफ चला गया।

चकित ड्राइवर ने पान वाले से पूछा– यह बच्चा कौन है ? पान वाले ने कहा– यह सामने ही पोस्ट मारसाब सत्यनारायणजी गौड़ का बच्चा है। अक्सर यह बच्चा कहता रहता है कि वह टोंक रहता है। मन से कई प्रश्नों को समेटे ड्राइवर अपनी राह पर चला और टोंक में विट्ठलदास के परिजनों को उस बच्चे के बारे में बताया भी, मगर किसी ने विश्वास नहीं किया और बात सुनी अनसुनी हो गई। इधर, पान वाले ने पोस्ट मास्टर सत्यनारायणजी को इस वाकये से अवगत कराया, तो वे भी सोचने को मजबूर हो गए कि आखिर क्या है सच ?

पूर्व जन्म में विट्ठलदास, नए जन्म में शादी के बाद और वर्तमान में राकेश

यह कहानी है कांकरोली निवासी पोस्ट मास्टर सत्यनारायणजी गौड़ के बेटे राकेश गौड़ के पुनर्जन्म की। जो पूर्व में विट्ठलदास सुथार (शर्मा) के रूप में टोंक के काफला बाजार दरवाजे के अंदर (काली पलटन) मोहल्ले में रहता था, जिसका फर्नीचर का बड़ा कारोबार था। 15 अगस्त 1955 को करंट की चपेट में आने में मौत हो गई थी और करीब 14 साल बाद 15 मार्च 1969 को कांकरोली में राकेश गौड़ के रूप में पुन: जन्म हुआ।

गीता में कहा गया है–

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत:॥

भावार्थ : आत्मा को न शस्त्र काट सकते, न आग जला सकत है, न जल गला सकता है और न ही वायु सुखा सकती है। हम अज्ञानता में अपने शरीर को ही सर्वस्व मान लेते हैं, जबकि हम शरीर नहीं, आत्मा है, जो कभी नष्ट नहीं हो सकती है। **राकेश गौड़ इसका एक जीता जागता उदाहरण है।**

आधुनिक युग में विज्ञान की उन्नति ने आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म आदि की मान्यताओं को गहरी चोट पहुंचाई है। विज्ञान तर्क व प्रमाण पर आधारित है और चूंकि इसके प्रमाण बहुत कम मिल पाते हैं। इसलिए सामान्यतया कोई भी व्यक्ति पुनर्जन्म की मान्यता पर विश्वास नहीं करता है। हिन्दू और बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म की मान्यता है, जबकि इस्लाम और ईसाई धर्म इसे महत्त्व नहीं देते हैं। वर्तमान में कई वैज्ञानिक इस तरह की घटनाओं पर शोध कर रहे हैं और उन्हें पुनर्जन्म के कई प्रमाण मिले हैं। कांकरोली में राकेश गौड़ के पुनर्जन्म कहानी भी बहुत बड़ा प्रमाण है, जिस पर भारत के साथ अमेरिका के वैज्ञानिकों ने भी करीब 15 वर्ष तक शोध किया।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

बच्चे की कारीगरी देख चौंक गए थे गुरुजी

मीडिल प्रथम विद्यालय कांकरोली में एक दिन शिक्षक मांगीलालजी अफंगी पढ़ा रहे थे, तभी उनके बैठने का स्टूल थोड़ा टूट गया, जिसे वो ठीक करने लगे, मगर सही नहीं हो पाया। इस पर पास में खड़ा राकेश बोला– गुरुजी मैं इसे अभी ठीक कर देता हूं, आप हथोड़ा मुझे दीजिए। गुरुजी से हथोड़ा, कील लेकर 6 साल के राकेश ने अनुभवी कारीगर की तरह कुछ ही देर में स्टूल सुधार दिया, तो गुरुजी भी चकित रह गए। गुरुजी ने पूछा– तुमने ये कार्य कहां से सीखा? तब राकेश बोला– मेरा तो ये खानदानी काम है। तब गुरुजी ने बोला– तू तो गौड़ ब्राह्मण है, खानदानी काम कैसे हो गया? इसका जवाब देते हुए राकेश फिर बोला– मैं तो पहले सुथार ही था। यहां गौड़ परिवार में नया जन्म हुआ है। यह बात सुनकर गुरुजी फिर चकरा गए। बाद में गुरुजी अफंगी ने यह बात राकेश पिताजी को बताते हुए कहा कि आप एक बार टोंक जाकर राकेश द्वारा बताई जा रही बातों का पता तो करें।

खिलौना बनाकर बताया खानदानी हुनर

कांकरोली चौपाटी स्थित शास्त्री मार्केट, जहां कभी नारायणजी शर्मा की आरा मशीन चलती थी, एक दिन वहां उनके बच्चों के साथ राकेश भी खेल रहा था। नारायणजी का बड़ा बेटा बृजेन्द्र उर्फ बबू लकड़ी का खिलौना बना रहा था, जो उससे सही नहीं बन पा रहा था। तभी राकेश ने सलाह दी कि इसको ऐसे बनाओ? मगर बबू ने अपनी उम्र से काफी छोटे राकेश की बात को अनसुना कर दिया। तभी बबू उठकर कुछ लेने के लिए बाहर गया, तो राकेश ने औजार उठाकर खिलौने को एक अनुभवी कारीगर की तरह ठीक कर दिया। वापस आकर बबू ने देखा तो खिलौने को देखकर चकित रह गया और बोला– अरे! राकेश तुने ये कैसे बना दिया? इस पर राकेश बोला– मैं तो पहले सुथारी का ही काम करता था और टोंक में मेरे कारखाना भी है।

बच्चों की यह बातें सुनकर पास ही बैठे नारायणजी सुथार ने राकेश को बुलाया और पूछा– तूं क्या बता रहा था? इस पर राकेश ने पुनर्जन्म की पूरी बात फिर दोहरा दी। इस पर नारायणजी को भी बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने राकेश के पिताजी को इस बात की पुष्टि करने के लिए प्रेरित किया।

जब पूर्व जन्म स्थल पर पहुंचा राकेश

इन सभी घटनाओं से प्रेरित होकर वह दिन आ ही गया, जब पिताजी राकेश के साथ टोंक जाने को तैयार हो गए। यहां से बस द्वारा जयपुर पहुंचे, जहां से दूसरी बस पकड़कर सूर्यास्त के समय टोंक बस स्टैंड पर उतरे। चूंकि पिताजी के मन में अब भी कुछ संशय बना हुआ था। सोचा- पोस्ट ऑफिस चलते हैं, वहां से किसी पोस्टमैन से राकेश द्वारा बताई जा रही गली-मोहल्ले के बारे में पुष्टि कर लेंगे। पैदल ही वे डाकघर पहुंचे, वहां किसी साथी कार्मिक की विदाई का कार्यक्रम चल रहा था। इसलिए शाम 6.30 बजे तक भी दफ्तर खुला था। वहीं पिताजी सत्यनारायण गौड़ के परिचित अधिकारी मिल गए। उन्हें जब राकेश की कहानी सुनाई, तो उन्होंने उस क्षेत्र के पोस्टमैन को बुलाकर पूछा, तो पोस्टमैन ने काफला बाजार व सुथार परिवार के रहने की पुष्टि कर दी। यह बात सुनकर वहां मौजूद सभी लोग चौंक गए और वे भी जिज्ञासावश वास्तविकता जानने के लिए राकेश साथ पैदल ही काफला बाजार की तरफ चल पड़े। आगे 7 साल का राकेश रास्ता बताते हुए चल रहा था, तो पीछे पीछे एक साथ 30-40 लोगों का हुजुम चल रहा था। सड़क पर एक साथ भीड़ को देख हर कोई कारण पूछते हुए साथ होते गए। रास्ते में राकेश ने क्रॉस हुए एक साइकिल रिक्शा में बैठे अपने बड़े पुत्र भंवर को पहचान लिया और पिताजी को बताया- वह मेरा बेटा जा रहा है। फिर भी पिताजी ने ध्यान नहीं दिया, चूंकि साइकिल रिक्शा तेज गति से क्रॉस होकर चला गया। फिर वे जैसे ही घर पहुंचे, तो ताला लगा हुआ था। पड़ोसी ने कहा भंवर की पत्नी बीमार होने से जयपुर में भर्ती है और वह भी अभी जयपुर गया है। राकेश ने उसके घर के आस पड़ोस में रहने वाले लोगों को पहचान लिया था। घर पर कोई नहीं था, तो वे वापस डाकघर पहुंच गए। तब तक विट्ठलदास के पुनर्जन्म होकर छोटे से बच्चे के रूप में पुन: टोंक आने की खबर आग की तरह बाजार में फैल गई और सैकड़ों की तादाद में भीड़ एकत्रित हो गई। यह बात टोंक में ही विट्ठलदास के ससुराल में रह रही पत्नी को भी पता चली, तो वह अपने आप को रोक नहीं सकी और तुरंत दौड़कर डाकघर पहुंच गई। पत्नी को देखते ही राकेश भावुक हो गया और नाम से पुकार कर परिवार का हालचाल पूछा। करीब 20 वर्ष पूर्व इस संसार से विदा हुए अपने पति को एक छोटे से बालक के रूप में देखकर वह भी भावुक हो गई। इस पर राकेश व पूर्व जन्म की पत्नी की आंखों में आंसू छलक पड़े। तभी राकेश ने पिताजी को कहा कि वह अब उसकी पत्नी व बच्चों के साथ ही रहेगा, जिसे सुनकर पिताजी भी असमंजस में पड़ गए। इस दृश्य को देखकर सैकड़ों की भीड़ भी चकित रह गई। उस वक्त 1976 में इंदिरा गांधी द्वारा देश में आपातकाल लगा रखा था। कहीं भी चार-पांच से अधिक लोगों का एक साथ खड़े रहना वर्जित था। ऐसी स्थिति में सैकड़ों की भीड़ जब डाकघर व उसके बाहर एकत्रित हो गई, तो मौके पर पहुंची पुलिस भी सकते में पड़ गई। भीड़ को काबू करना पुलिस के लिए मुश्किल हो गया। पुलिस ने राकेश के पिताजी को बुरी तरह से डांट लगाई कि ऐसा था, तो पहले पुलिस थाने में सूचना देनी थी। फिर पुलिस द्वारा भीड़ से समझाइश की गई कि अभी रात के 11 बज चुके हैं और बच्चा थक गया है। यह बच्चा कल दिनभर यहीं है और हर एक से मिलेगा। अभी आप अपने अपने घर चले जाए। तब धीरे धीरे भीड़ तितर बितर होने लगी। जब भीड़ जा चुकी थी, तब पुलिस ने राकेश के पिताजी को कहा कि रात 12 बजे की बस सीधी कांकरोली जाती है, जिससे आप चले जाएं। वरना अभी रात को इतनी भीड़ है, तो दिन में इससे चार गुना भीड़ होगी। वक्त का तकाजा समझकर राकेश को लेकर पिताजी रवाना हो गए और सुबह कांकरोली पहुंच गए।

कांकरोली में राकेश के पिता पोस्ट मास्टर सत्यनारायणजी गौड़ व माता।

कांकरोली में वर्तमान में राकेश गौड़

अब दोनों जन्मों के निभा रहे रिश्ते

टोंक में 1920 में जन्म होकर विट्ठलदास शर्मा का 15 अगस्त 1955 में निधन हो गया और 15 मार्च 1969 में कांकरोली में राकेश गौड़ के रूप में पुनर्जन्म लेने के बाद अब राकेश दोनों ही जन्मों की रिश्ते बखूबी आज भी निभा रहे हैं। पहले सुथार थे और पुनर्जन्म गौड़ ब्राह्मण परिवार में हुआ। पुनर्जन्म का पता चलने के बाद पूर्व पत्नी केसर देवी उर्फ मल्लो कई माह व वर्षों तक कांकरोली में रही। तब से आज तक पूर्व जन्म के बेटे, पौते, बहनें, दोहित्र तक की सगाई से लेकर शादी-ब्याज तक सारे परिवारिक कार्य आज भी राकेश के निर्देशन में ही हो रहे हैं। टोंक में सुथार (शर्मा) परिवार के सभी लोग आज भी राकेश गौड़ को पूर्व जन्म के विट्ठलदास के रूप में दादाजी मानते हैं। टोंक में उनकी पत्नी केसर देवी और भाई रामविलासजी का करीब 15 वर्ष पहले निधन हो गया। बेटे भी नहीं रहे, मगर पौते-पौत्रियां, दोहित्र आज भी यहां कांकरोली आते हैं और कांकरोली से राकेश गौड़ का परिवार टोंक जाता रहता है।

राकेश गौड़ व वर्तमान पत्नी राधा के साथ पूर्व जन्म के प्रपौत्र लक्ष्य शर्मा, पौत्र नरेंद्र शर्मा एवं दाएं से पौत्रवधू मोनिका शर्मा तथा राकेश की वर्तमान बेटी दिविशा।

टोंक-बूंदी में दो बेटों का परिवार

टोंक में विट्ठलदास का जन्म रामजीवन के घर हुआ। उसके एक भाई रामविलास था, जिसके कोई संतान नहीं थी। तीन बहनें पार्वती, गोरा व दमयंती थी और तीनों का निधन हो चुका है। विट्ठलदास के दो बेटे भंवरलाल उर्फ धर्म व बाबूलाल थे। बड़े भाई रामविलास के कोई संतान नहीं होने से बाबूलाल गोद चला गया। दो बेटियां मुन्नी व पुष्पा है, जबकि भंवर का बेटा नरेंद्र आज 42 वर्ष होकर शिक्षक है और बेटी अक्षिता भी शिक्षिका है, जो अमलोई विद्यालय में लंबे समय तक रह चुकी है। नरेंद्र के दो बेटे लक्ष्य (17) व तोस्य (14) है। विट्ठलदास यानि राकेश के बड़े बेटे भंवर का परिवार आज भी टोंक में ही रह रहा है।

राकेश का छोटा बेटा बाबूलाल जो बूंदी में रह रहे भाई रामविलास के गोद चला गया, जो आज भी बूंदी जिले में रह रहा है। बाबूलाल का भी निधन हो गया, उनके बेटे रवि (38), भानु (35), बेटी रेखा (45) है। रवि नृसिंग कॉलेज बूंदी में है, जबकि भानु फर्नीचर का कामकाज संभाल रहा है। रवि और भानु के भी दो- दो बेटा-बेटियां है।

कांकरोली में राकेश का परिवार

राकेश के रूप में कांकरोली में पोस्ट मास्टर सत्यनारायण गौड़ के घर पुनर्जन्म हुआ। राकेश सबसे बड़े भाई राजेंद्र थे, जिनका निधन हो चुका है। उससे छोटा भाई विनोद जो सेक्सरिया मार्बल में लेखाकार है, जबकि राकेश से छोटा भाई अनिल है। राकेश का इस जन्म में ब्यावर की राधा से विवाह हुआ। उल्लेखनीय है कि इस शादी में राकेश के पूर्व जन्म की पत्नी केसरदेवी भी अपने करीब 40 सदस्यों के पूरे परिवार सहित शामिल हुई थी। राकेश का वर्तमान में एक बेटा हर्ष बीए फाइनल में है, जबकि एक बेटी दिविशा 11वीं में अध्ययनरत है।

हरिद्वार का पंडा भी हो गया चकित

सभी परिवारों की जानकारी का रिकॉर्ड रखने वाला हरिद्वार का पंडित मुंशीराम तुमड़िया जब टोंक पहुंचा, तो उसे भी विट्ठलदास के पुनर्जन्म की जानकारी हुई, तो अपने आप को रोक नहीं सका। वह कांकरोली पहुंच गया, जहां राकेश से रजिस्टर से हस्ताक्षर करवाए, तो पूर्व जन्म के विट्ठलदास के हस्ताक्षर से हुबहू मिले, जिसे देख उसे भी अचरज हुआ।

टोंक में फहराया था पहला कांग्रेस का झंडा

राकेश ने पूर्वजन्म की कहानी सुनाते हुए बताया कि वह राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में काफी सक्रिय रहा। आजादी के बाद टोंक व निम्बाहेड़ा के नवाब राजस्थान के संपूर्ण विलय में सहमत नहीं थे, मगर सरदार वल्लभ भाई पटेल के दबाव में उन्हें समर्पण करना पड़ा। तब टोंक के नवाब के साथ सारे निवासी कांग्रेस से काफी नाराज थे, मगर ऐसी स्थिति में सबसे पहले मैंने ही कांग्रेस का झंडा अपने घर के फहराया और कांग्रेस का प्रचार कर लोगों को जोड़ा था।

टोंक-बूंदी में था फर्नीचर का बड़ा कारोबार

राकेश ने पूर्व जन्म में टोंक में विट्ठलदास ने फर्नीचर का कारोबार शुरू किया। 1941 में स्टाइलिश फर्नीचर एण्ड मोटर का कारखाना खोला, तब लाइट फिटिंग, मोटर रिवाइडिंग, फर्नीचर व पीडब्लूडी के ठेके लेकर भी कार्य करते। टोंक के साथ बूंदी में भी कारोबार था। बाद में बूंदी में रवि फर्नीचर वर्क्स शॉप खोली, जो आज भी है। तब ही भाई रामविलास कारोबार के चलते बूंदी में बस गया, जबकि विट्ठलदास टोंक में रहा। उस वक्त 1942 में विट्ठलदास के पास एक बीआईएस की मोटरसाइकिल, एक कार व एक साइकिल थी। एक बार टोंक से उनियारा गए, तब रास्ते में बनास नदी पड़ती है, जहां कार फंस कर बंद पड़ गई। खराब होने पर कार उनियारा में ही बेच कर वापस घर टोंक लौट आए। पैसा खूब कमाया, मगर संग्रह नहीं किया। खास तौर से धार्मिक आयोजन, साधु-संतों की सेवा, भजन कीर्तन, सामूहिक भोज पर खूब खर्च किया। उसके बाद उनकी बड़ी बहनों की शादी हुई, जिसमें लाइट डेकोरेशन किया, जो उससे पहले कभी किसी के घर ऐसी लाइटिंग नहीं हुई थी।

देश-विदेश के वैज्ञानिकों ने किया शोध

राकेश के पुनर्जन्म के बाद देश, विदेश के कई वैज्ञानिकों ने शोध किया। राजस्थान विश्वविद्यालय में परामनोविज्ञान विभाग द्वारा शोध किया। इसी तरह न्यू इंफोरमेशन फेवोरिंग एं पेरानॉर्मल इंटरप्रेटेशन इन द केस राकेश गौड़ (सतवन्त के पसरीचा डेविड, रिट बारकर, अर्जीनिया) द्वारा करीब वर्ष 1973 से 15 वर्ष तक लगातार शोध किया और पुनर्जन्म को सही माना।

राजसमंद के संगीत गुरू श्री देवीलाल शर्मा

वैदिक काल से पहले ही भारत में संगीत की समृद्ध परम्परा रही है। दुनिया के बहुत कम देशों में संगीत की पुरानी और समृद्ध परम्परा पाई जाती है। भारतीय संगीत में यह माना जाता है कि संगीत के प्रेरक शिव और सरस्वती है। इसका अर्थ यह है कि मानव जाति उच्च कला को बिना किसी देवी कृपा के अपने बल पर विकसित नहीं कर सकती थी और यह भी मान्यता है कि संगीत का मूल स्रोत वेद हैं। कहते हैं कि ब्रह्माजी ने नारद मुनि को संगीत का वरदान दिया था। सिंधु घाटी की सभ्यता के पतन के पश्चात वैदिक संगीत की अवस्था का प्रारम्भ हुआ, जिसमें संगीत की शैली में भजनों और मंत्रों के उच्चारण से ईश्वर की पूजा और अर्चना की जाती थी।

भारतवर्ष की सारी सभ्यताओं में संगीत का बहुत महत्व रहा है। धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान सदियो से रहा है और सदियो तक रहेगा। पुष्टि मार्ग में भी संगीत का अपना अलग अनुराग है, भक्त कवियों ने, सूफियों ने भी संगीत से परमात्मा की साधना की है। नाथद्वारा, कांकरोली में भी पुष्टि मार्ग के मंदिर होने से अष्ट छाप के कीर्तन गान की परम्परा रही है। यहां के वातावरण में गीत, संगीत रग रग में बसा हुआ है।

आज हम बात करते हैं **माटी का लाल** कॉलम में एक बहुत आयामी व्यक्तित्व के धनी **श्री देवीलाल शर्मा** की, जिन्होंने संगीत को जीया और एक सपने को साकार कर नगर में पहला संगीत विद्यालय संचालित किया।

उनका जन्म विक्रम संवत 1964, सन् 1907 को नगर के अति साधारण शाकद्विपीय ब्राह्मण परिवार में श्री रतनलाल शर्मा और माता इन्द्रा देवी के पुत्र रत्न के रूप में हुआ। उनके पिता स्थानीय ठिकाना के कोतवाल थे। तब संवत 1974 में गोस्वामी श्रीमती पद्मावती बाई (मांजी महाराज) के शासनकाल में कांकरोली ग्राम में भंयकर महामारी फैल गई, जिससे अनेक लोग इस छूत की महामारी से काल के ग्रास बन गए। उनके पिताजी का इस बीमारी से देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु जल्द होने से परिवार की आर्थिक हालत कमजोर होने लग गई।

उनके पिता की निष्ठा और कर्तव्य परायण के कारण माजी महाराज (प्रशासक) ने रतनलाल के बड़े पुत्र सालिगराम शर्मा को शहर कोतवाल की नौकरी पर रखा, जो कुशल प्रशासक माने जाते थे। पारिवारिक जीवन संघर्ष और तंगहाली में गुजरता देख श्री देवी लाल ने भी कम उम्र में नौकरी करने की ठान ली, तब माजी महाराज ने देवीलाल की नियुक्ति संवत 1980 को मात्र 16 वर्ष की आयु में महकमा सरिश्यह में रोजनामचे पर मात्र 12 रुपए मासिक पगार पर लगा दी। पहले बाल विवाह की परम्परा होने से उनकी शादी 15 वर्ष की आयु में देवगढ़ निवासी स्व. नारायणलालजी की पुत्री सुन्दर बाई से हो गया, सो गृहस्थी की जिम्मेदारी भी बढ़ गई थी।

कालान्तर में अपनी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से मंदिर के तत्कालीन महाराज श्री ब्रजभूषणलाल के विश्वासपात्र बन गए। श्री द्वारिकाधीश मंदिर तृतीय पीठ द्वारा संचालित विभिन्न सेवा प्रकल्प व प्रशासनिक स्थान पर कार्य किए। सन् 1929 से लेकर जीवन के 1994 तक प्रभु श्री द्वारिकाधीश के चरणों में हारमोनियम बजाने की सेवा किया करते थे।

प्रभु श्री के दर्शन उपरांत मंदिर की महत्वपूर्ण संस्था श्री विद्या विभाग में सन् 1944 से सन् 1952 तक रोकड़ का काम करते रोकड़िया की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को संभाला। मेहनती स्वभाव से उन्होंने कभी अपने जीवन में आलस्य को स्थान नहीं दिया। अपने सामर्थ्य से हर अवसर को भुनाया और अपने अन्दर उन तमाम गुणों का समावेश किया, जो इन्सान को बहुआयामी बनाता है। सुन्दर टॉकीज (सिनेमा) जो श्री द्वारकाधीश मंदिर के महाराज का था। वहां सांयकाल अतिरिक्त (सहायक मैनेजर) पद पर सन् 1951 से सन् 1954 तक 20 रुपए मासिक पर कार्य किया।

महाराज श्री ब्रजभूषणलाल हॉकी के अच्छे खिलाड़ी थे, जिन्होंने द्वारकेश टीम का गठन किया और कांकरोली में हॉकी खेल की शुरूआत हुई। इस क्लब में श्री ब्रजभूषणलाल, श्री विठ्ठलनाथ महाराज, श्री राजकिशन माथुर (जज साहब), श्री रतनसिंह राजपूत (नगरपालिका के प्रथम चेयरमैन), श्री बिहारीलाल वर्मा, श्री जय किशन पालीवाल, श्री मोहनलाल पालीवाल (उपनिदेशक शिक्षा विभाग), श्री कज्जूलाल पालीवाल, श्री छोटूलाल महाबनिया, श्री श्याम वर्मा, श्री बंसतीलाल माथुर आदि खिलाड़ी थे, जिन्होंने सम्पूर्ण राजस्थान में जाकर अपनी धाक जमाई। देवीलालजी ने टीम में मैनेजर की भूमिका का बखूबी निर्वाह किया और खिलाड़ी भी रहे।

आगे जाकर इसी टीम के श्याम-किशन की जोड़ी ने देशभर में हॉकी खिलाड़ी के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई और भारतीय टीम के लिए भी चयन प्रक्रिया में हिस्सा बने। दुर्भाग्य से दोनों भारतीय टीम में खेल नहीं पाए। वैसे कांकरोली नगर की मिट्टी की ये तासीर है कि यहां के लोगों में कला, साहित्य, संस्कृति की बेमिसाल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कहे तो खून में वंशानुगत जैविक गुण रहा है। यहां के लोगों मे अद्भुत क्षमता पीढ़ी दर पीढ़ी पाई जाती है, जो पहलवान है, वो अच्छा साहित्यकार भी है। खिलाड़ी होने के साथ अच्छा चित्रकार है, भी तो कोई अच्छा वादक है, तो कोई अच्छा गायक है। ये विचित्र सी अलौकिक प्रतिभा हर पीढ़ी में नज़र आ ही जाती है। कृष्ण भक्ति का ये कोई करिश्मा ही हो सकता है। कहते है कि भगवान श्री कृष्ण 64 कला में सिद्धहस्त थे। इसका असर मेवाड़ की भूमि में भी दिखाई देता है।

श्री देवीलाल शर्मा ने अपने पुरूषार्थ से नगर में सबसे पहला संगीत विद्यालय (श्री द्वारकेश संगीत पाठशाला) नाम से अपने घर पर प्रारंभ की, जहां श्री मन्नुभाई, श्री बाबू भाई, पंडित श्री जमना प्रसाद, श्री हरिदास सनाढ्य, श्री मांगीलाल अफंगी, श्री बंशी लाल सनाढ्य (बंशी पंडित) आदि कई संगीतज्ञ और गायक रियाज करने आते थे।

इस संगीत विद्यालय में उत्तरप्रदेश से नियमित निकलने वाली संगीत पुस्तके आती थी, जो आज भी संभाल कर ऱखी गई है। उसके साथ ही संगीत और साहित्य पर लिखी हस्तलिखित दस्तावेज पाण्डुलिपियां और सभी तरह के वाद्य यंत्र, सितार, तबला, टासकोट हारमोनियम, पखावज आदि जो थे, वो आज भी ज्ञान ज्योति बाल मंदिर विद्यालय में (स्मृति शेष कक्ष) में मौजूद है, जिसे उनके पुत्र श्री भगवत शर्मा रेती मोहल्ले में उन्हीं के घर में चलाते है, जिसमें उन्होंने संगीत विद्यालय चलाया था।

आज भी श्री पराग कुमार महाराज के पास उनकी संगीत वाली हारमोनियम की रिकार्डिंग मौजूद है। भगवत शर्मा ने बताया कि उनके पिताजी का सपना था कि बच्चों को संस्कारी शिक्षा देने के लिए स्कूल संचालित किया जाए, तो उनका सपना पूरा करने अपने स्तर पर सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालय संचालित कर रहा हूं, जिसे वे और उनका पुत्र यशवंत शर्मा संभालते हैं।

श्री भगवत शर्मा ने बताया की उनके पिता देवीलाल जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। साहित्य में उनकी रूची थी, उनकी लिखी कविताएं, गद्य, पद्य, मुक्तक, भजन की डायरी को एक याद के रूप सहेज कर रखा गया है।

विद्या विभाग की नौकरी के समय सूरत, मेरठ व कोटा के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में पुष्टी मार्ग की साहित्य प्रदर्शनी लेकर गए। वो मिलन सार व्यक्तित्व के सरल इन्सान थे, स्पष्ट वक्ता थे, मगर मधुर स्वभाव थे।

शहर के लोगों में अपनी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा के रूप में जाने जाते थे। यूं कहे कि सादा जीवन उच्च विचार के प्रतीक थे। इनमें एक ये हुनर भी था, वो अच्छे जिल्दसाजी के कारीगर थे और वो ये कार्य भी करते थे। उनके द्वारा की गई जिल्दसाजी की किताबें, दस्तावेज आज भी ज़िला न्यायालय राजसमन्द के बार ऐसोसिएशन के कक्ष में देखी जा सकती है।

वो नियमित दिनचर्या में सवेरे 4 बजे उठ वैदिक संस्कृति के पूजा पद्धति से नित्य संध्या वंदन करते और प्रभु कीर्तन करने के बाद नौकरी पर जाते व सभी कार्य करते थे, वे सच्चे प्रभु भक्त थे। 5 मई 1968 में प्रभु द्वारिकाधीश की बृजयात्रा में सभी नगरजन ठाकुर जी के साथ गए, तब वे भी कीर्तनकार थे, सो ब्रजयात्रा में उनके साथ गए। पीछे से उनकी माता का स्वर्गवास हो गया, तो अधूरी यात्रा छोड़ कर यहां कांकरोली आ गए। तब प्रभु दर्शन बिना मन नहीं लगा, तो ये यूं लिखा–

जब ते प्रभु ब्रज में गए, चहल पहल यहां ठप्प,
धंधें ठंडे पड़ गए, केवल रह गई गप्प।।

फिर ठाकुरजी कांकरोली पधारे, तब यूं लिखा–

द्वारकेश प्रभु के बिना सुनसान ये गांव,
आज हमारे भाग्य है, जो पुनि आए निजधाम।।

वो प्रभु भक्ति में उम्र के आखिरी पड़ाव तक लीन रहे। उन्होंने श्री बृजेश कुमार महाराज के प्रथम पुत्र रत्न वागिश कुमार के जन्म पर, उसके शुभकामना संदेश पर लिखा–

श्री बृजेश के लाल, प्रिय वागीश कुमार
पुत्र प्रकट गृह आपके उमड़ा हर्ष अपार,
वैष्णव जन अति मुदित हैं करत जय जयकार,
हम सबकी शुभकामनाएं करें आप स्वीकार।

उन्होंने द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् लाल बंगले पर हुई गोष्ठियों में अहम भूमिका निभाई। द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् के श्री द्वारिकाधीश प्रभु के पाटोत्सव में श्री फतेहलाल जी अनोखा ने उनके नाम से साहित्य सम्मान का हर वर्ष पुरस्कार देने की परम्परा प्रारंभ की। श्री देवीलाल अन्तिम समय में भी 22 मई 1994 को 85 वर्ष की उम्र में श्री द्वारिकाधीश प्रभु सेवा में राजभोग की झांकी में कीर्तन करने के उपरांत सांय 4 बजे ठाकुरजी ध्यान में लीन रहते हुए हमेशा के लिए उन्हीं में विलीन हो गए और वैकुंठधाम प्रभु चरणों में सिधार गए। वो पीछे पत्नी सुन्दर बाई, दो पुत्र नटवरलाल, भगवत और तीन पुत्रियां यमुना, पार्वती, गीता शर्मा व भरा पूरा परिवार छोड़ गए। उनकी एक पुत्री शांति का स्वर्गवास पहले हो चुका था। इन्हीं के पदचिह्न पर चलकर उनके दोनों पुत्र नटवरलाल शर्मा, उप ज़िला शिक्षा अधिकारी देवगढ़ और भगवत शर्मा बतौर शिक्षक व समाजसेवी के रूप में कई वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

श्री भगवत शर्मा क्रांतिकारी विचार से असत्य के खिलाफ खड़े होकर डंके की चोट पर लड़ने वाले व्यक्तित्व के रूप में अपनी जागरूक छवि की मिसाल आज 76 वर्ष की उम्र में भी कायम रखे हुए हैं। एक सच्चे समाजसेवी की भूमिका में राजसमन्द की जनता के बीच नज़र आते हैं, कई मुद्दों पर वो आज भी समाजहित में शासन, प्रशासन से जुझते हुए हक की बात रखते हैं। श्री भगवत कहते हैं, मुझमें समाजसेवा के ये भाव पिताजी के दिए संस्कारों की देन हैं। आज भी नगरवासी श्री देवीलाल की स्मृति को अपने दिलो दिमाग में हमेशा अंकित रखते हैं और संगीत व साहित्य के आयोजनों में उनकी उपलब्धियों का जिक्र विद्वानजन और वक्ताजन करते हैं। आप सी विभूति पर लिखकर मैं भी अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हुए आपके विरले व्यक्तित्व को नमन करता हूं।

सूर्यप्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभुत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे

E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

चतुराई काम न आई

राजीव के सब्जी मंडी में आते ही अचानक सब्जी बेचने वालों के बीच में खलबली मच गई। काफी समय से राजीव सब्जी मंडी आता है और हर सब्जी खरीदने में कुछ ना कुछ बहसबाजी करता ही रहता है।

उसे देखकर अब सब्जी वाले समझ गए हैं कि इसे कितने भी रेट बता दो, वह हमेशा आधी रेट में ही सब्जी खरीदने की बात करता है। इसी का इलाज ढूंढने में सभी सब्जी वाले परेशान हैं।

अपनी दुकानदारी तो सभी को करनी है, इसलिए राजीव का स्वागत सभी सब्जी वाले करते हैं, लेकिन आज कुछ ऐसा हुआ कि राजीव एक दुकानदार के हाथों फंस गया।

आलू वाले के पास पहुंच कर रवि ने आलू का रेट पूछा। बाबूजी 25 रुपए किलो। अपनी आदत के अनुसार राजीव बोला– यार तुम तो बहुत महंगा लगाते हो, अभी पीछे ही मैंने पता किया था तो उस दुकानदार ने 20 रुपए बताया।

उसी बहस के दौरान राजीव को एक फोन आया। राजीव एक बिजनेसमैन है और उसके किसी ग्राहक का फोन आया था। बातचीत से ऐसा लग रहा रहा कि जो उससे बात कर रहा है वो किसी केमिकल के बारे में पूछ रहा था।

राजीव ने उसको अपने हिसाब से रेट बताया 100 रुपए किलो। सामने वाले ने शायद कुछ कम रेट देने के लिए कहा होगा और इसी बात पर राजीव की और उससे फोन पर बात कर रहे व्यक्ति से बहसबाजी हो गई।

राजीव ने उस फोन पर बात कर रहे व्यक्ति से कहा कि 80 रुपए में एक किलो अगर बेचने लगुंगा, तो मैं तो बर्बाद हो जाऊंगा। आप कहीं और से ले लीजिए, सभी लोग अपने ही भाई है और फोन रख दिया।

एक बार फिर से वो उसी सब्जी वाले से बहस करने लगा कि वो दूसरा दुकानदार तो 20 रुपए किलो दे रहा है। सब्जी वाले ने हंसते हुए सर अगर ऐसे सब्जी बेचुंगा, तो मैं तो बर्बाद हो जाऊंगा। आप उसी से ले लीजिए, यहां बाजार में सभी अपने ही भाई है। मैं समझुंगा मैंने ही आपको आलू बेचा है।

राजीव उसके इस तरीके के व्यवहार को समझ गया और चुपचाप वहां से चला गया और उसके बाद राजीव जब भी वहां सब्जी लेने आया, उसने कभी किसी से बहसबाजी नहीं की।

नीरज त्यागी
65/5 लाल क्वार्टर राणा प्रताप स्कूल के सामने
गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश) 201001
मो. 09582488698

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

More Challenging Time for the Upcoming Generation...

Imagine the situation that a doctor has asked you to follow diet chart for the future life for desired healthy life while a plate of delicious food containing everything you like, is available at all the times. The mental fight now starts between the doctor's advice of following a diet chart and your desire to consume the favourite food items. It's not the greed as there is no search process applied for, but only the matter of use/misuse of the available resources.

Exactly, same is the situation with the upcoming generation. Everything is easy available to watch up to any extend, explore anything, play, buy and to connect with the world exposing all desired and undesired content, so on and so forth due to the easy availability of internet facilities. Aren't we entering into a world termed as "Bhool Bhulaiya"?

There is a saying in Bhagwat Geeta – "Samatvam Yog Uchyate"means balance. The yogi is the one who not only knows what is right & wrong but also can opt and implement the right option when there is a mental conflict and able to make perfect balance. For sure, it is not everyone's cup of tea to become a true yogi and make a perfect balance between the use and misuse of the internet yet one can't be fully negligent. The misuse simply can't be defined for watching or playing something, which is not good but the overuse for any purpose which becomes out of control or the part of your life.

The intelligence can never be replaced by artificial intelligence but if every question is answered by 'Google', the natural intelligence will be forced to become artificial. It's an alarming bell for everyone to maintain a log-book of use/misuse of internet. Especially, the parents of younger ones need to keep an eye on the internet uses of their wards. At the same time it is important and must to motivate teenagers to play the games physically, to make friends in the real world and to spend time with grandparents. Rather than chatting through social media better to go to friends and ask what's up…!

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study International School, Nathdwara

परोपकारी सम्पतजी चोरड़िया

कांकरोली के प्रतिष्ठित परिवार में पिता श्री बाबूलालजी चोरड़िया के घर कांकरोली की इस धरा पर माता मोहनबाई की कोख से 9 जनवरी 1933 को श्री सम्पतलालजी चोरड़िया का जन्म हुआ। इस बहुमुखी प्रतिभा का विकास अपनी मां और पिता की छत्र-छाया में पल-पोस कर निखर पाया।

श्री सम्पतलालजी की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा उस समय के बहुत ही अच्छे विद्यालय में गिने जाने वाले उदयपुर के विद्याभवन स्कूल में हुई। आप बचपन से ही प्रतिभाशाली और पढ़ाई के प्रति लग्नशील थे। आपके जीवन पर विद्याभवन स्कूल के संस्थापक श्री मोहनसिंहजी मेहता के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव रहा। सादगी, स्वावलम्बन और परिश्रम जैसे गुणों का आपके जीवन में इसी विद्यालय से बीजारोपण हुआ। आपने इंजीनियरिंग के साथ ही कई प्रकार के तकनीकी प्रशिक्षण हरियाणा, पंजाब, दिल्ली और कलकत्ता जैसे शहरों में रहकर प्राप्त किए। इतना सब कुछ होने के बाद भी आपने कोई सरकारी नौकरी या बहुत बड़ा करोबार करने के बजाय अपने कॅरियर के प्रारम्भिक दौर में सापोल, नाथद्वारा आदि जगह से अपना कार्य प्रारम्भ किया और अंत में आपने ही गांव कांकरोली में एक कैलाश इलेक्ट्रीक की दुकान को ऊंचाईयां देना प्रारम्भ किया। वह समय कांकरोली में विद्युतीकरण का था। श्री द्वारकाधीश मन्दिर मंडल का बिजलीघर सिर्फ मन्दिर और कुछ खास खास घरों तक ही बिजली दिया करता था, पर जब कांकरोली रेलवे स्टेशन के पास नया सरकारी बिजली घर बना और पूरे कांकरोली राजनगर का विद्युतीकरण हुआ तो श्री सम्पतजी का काम चल निकला। आपने यहां के कई नौजवानों को रोजगार से जोड़ा और अपने प्रतिष्ठान को आगे बढ़ाया। सम्पतजी की प्रवृति से जो लोग वाकिफ थे, वे जानते हैं कि लोभ, माया या धन संग्रह कभी आपके जेहन में नहीं रहा। वे सरल, सस्ता और सुन्दर में विश्वास रखते थे।

श्री सम्पतजी तेरापंथ धर्म संघ के समर्पित श्रावक थे। वे लम्बे समय तक तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पद पर रहे। आज हम शहर में जो प्रज्ञा विहार का आलीशान भवन देख रहे हैं, उसके भूखण्ड को रियायती दरों पर समाज को उपलब्ध कराने का श्रेय आपके अध्यक्षकाल को ही जाता है।

वे प्रखर व कुशल वक्ता थे। किसी भी विषय पर दोहे, कविता एवं कथाओं का समावेश करके रोचक रूप से प्रभावी प्रस्तुति देने में सक्षम थे। उन्होंने लगभग 25 डायरियों में जीवन के सार का संकलन साहित्य की विभिन्न विधाओं में किया है।

सामाजिक प्रवृतियों में उनकी सक्रिय भूमिका रही, सेवाभारती और इलेक्ट्रीकल डीलर्स से बरसों जिलाध्यक्ष रहे। उन्हें विद्याभवन, महाराणा राजसिंह शिक्षण समिति, अग्रवाल समाज, मन्दिर मण्डल, तेरापंथ कॉन्फ्रेंस सहित अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया। वे रूढ़ियों के घोर विरोधी व पर्यावरण के प्रबल परोपकारी थे। कांकरोली के दोनों मोक्षधामों को पौधारोपण कर हरा भरा किया और बरसों बतौर अध्यक्ष रहकर मोक्षधामों की व्यवस्थाओं का सफल संचालन किया।

मेरे लिए भी वे प्रेरणा के स्रोत रहे। मैंने उनमें सबसे बड़ा गुण यह देखा कि वे बिना किसी भेदभाव के कांकरोली के किसी भी जाति या धर्म के लोगों के घर में कोई गमी होती, चाहे वो छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर, किसी भी समुदाय का हो, वे जरूर उसके गम में शरीक होते थे। ऐसे उच्च आचरण के मेरे गांव के आदर्श पुरूष श्री सम्पतलालजी चोरड़िया, 12 जून 2011 को ईश्वर को प्यारे हो गए और अपने नेत्रदान कर किसी की आंखों को रोशनी दे गए। ऐसे महापुरूष को शत-शत नमन् और हार्दिक श्रद्धांजलि।

निर्गुणी भजन गायक दोला बा

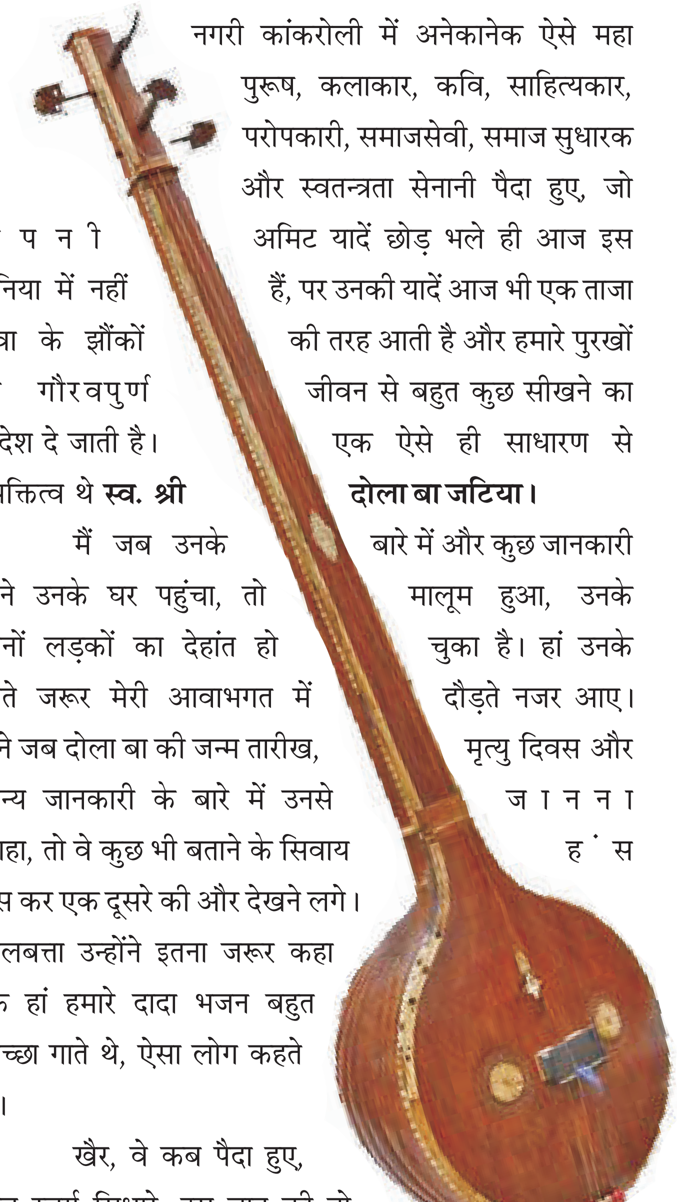

विभिन्न धर्मावलम्बियों की धार्मिक नगरी कांकरोली में अनेकानेक ऐसे महा पुरूष, कलाकार, कवि, साहित्यकार, परोपकारी, समाजसेवी, समाज सुधारक और स्वतन्त्रता सेनानी पैदा हुए, जो अपनी अमिट यादें छोड़ भले ही आज इस दुनिया में नहीं हैं, पर उनकी यादें आज भी एक ताजा हवा के झौंकों की तरह आती है और हमारे पुरखों के गौरवपुर्ण जीवन से बहुत कुछ सीखने का संदेश दे जाती है। एक ऐसे ही साधारण से व्यक्तित्व थे **स्व. श्री दोला बा जटिया।**

मैं जब उनके बारे में और कुछ जानकारी लेने उनके घर पहुंचा, तो मालूम हुआ, उनके तीनों लड़कों का देहांत हो चुका है। हां उनके पौते जरूर मेरी आवाभगत में दौड़ते नजर आए। मैंने जब दोला बा की जन्म तारीख, मृत्यु दिवस और अन्य जानकारी के बारे में उनसे जानना चाहा, तो वे कुछ भी बताने के सिवाय हंस हंस कर एक दूसरे की और देखने लगे। अलबत्ता उन्होंने इतना जरूर कहा कि हां हमारे दादा भजन बहुत अच्छा गाते थे, ऐसा लोग कहते हैं।

खैर, वे कब पैदा हुए, कब स्वर्ग सिधारे, इस बात की तो कोई ठोस जानकारी में प्राप्त नहीं कर सका, पर उनका तम्बुरा (तानपुरा) के दर्शन मैंने जरूर उनके घर पर कर लिए, जो टूटी फुटी हालत में उनके पुश्तैनी घर में रखा हुआ था।

आज से लगभग 50-60 वर्ष पूर्व जब कांकरोली एक शांत और सुन्दर गांव हुआ करता था, तब भीलों की मगरी चौमुखा महादेव के ऊपर वाली मगरी पर कुछ इक्का-दुक्का झोंपड़ीनुमा मकान हुआ करते थे और पास ही नहर के किनारे रामदेवजी का मन्दिर नया नया मेरी आंखों देखे ही बना था। उसी मन्दिर में हर अमावस और पूर्णिमा पर श्री दोला बा अपना तानपुरा ले मधुर भजन गाया करते थे। उस समय कांकरोली में इतना ध्वनि प्रदूषण नहीं था। अतः पूरे मोहल्ले में उनके द्वारा गाये भजन घर-घर में सुनाई दिया करते थे। 15-20 लोगों का समूह भी आकर भजनों का आनन्द लिया करता था। खास तौर से कबीर, दादू दयाल, मीरा के भजनों का तानपुरा और ढोलक की थाप के साथ वो समा बनता था कि कब रात सुबह में बदल जाती, पता ही नहीं चलता ।

छोटी-छोटी आंखें वैसी ही छोटी मुंछे, सफेद बाल और भवारे। सर पर सफेद पगड़ी, गले में अंगोछा, दुबला पतला छरहरा बदन, रेजे की धोती और कुर्ता अंगरखी पहने वो सलीकेदार व्यक्तित्व मुझे आज भी याद है।

मैंने बचपन में उनके भजनों को बहुत सुना और गुनगुनाया भी। ये दो दिन दर्शन मेला रे, उड़ जाएगा हंस अकेला रे-कबीर..., हरि का मन्दिर में, प्रभु का मन्दिर में मीरा बाई नाचे... आदि न जाने कितने ही भजन उनकी मधुर वाणी में मैंने सुने और मुझे आज भी एक चलचित्र की तरह जब भी रामदेव मन्दिर में कोई भजन का कार्यक्रम होता है, तो मेरे जेहन में उभर आते हैं ।

दोला बा का समाजजन में बड़ा आदर था आस पास के गांव में भी वे अपने भजनों का कार्य करते थे, लोग बढ़े चाव से उन्हें बुलाते और उनके भजनों का आनन्द लेते। समाज की कुरूतियां मिटाने में भी कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी। वे अपने भजनों के दौरान ही कबीर और दादू के साहित्य का उदाहरण देकर लोगों में मानवतावादी दृष्टिकोण जगाने का आह्वान किया करते थे। ऐसे बुजुर्ग को शत-शत श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफजल
जलचक्की सलूस रोड़, कांकरोली
मो. 9828475288

चांदी की माइंस से चमक उठा रेलमगरा, बना व्यापार का केंद्र

यहां न है रेल, न मगरा, फिर भी कहलाता है रेलमगरा

रोशनलाल टुकलिया @ रेलमगरा
liverajsamand.com

राजसमंद जिले में स्थित रेलमगरा उदयपुर, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा की सरहद के करीब है। जब राजसमंद भी उदयपुर जिले में शामिल था, तब भी रेलमगरा तहसील थी, आज उपखंड मुख्यालय है। रेलमगरा का नाम सुनते ही हर किसी व्यक्ति के जेहन में एक बात आती है कि मंगरा (पहाड़) की बहुलता होगी अथवा मगरों के बीच रेल गुजरती होगी। शायद इसीलिए गांव का नाम रेलमगरा पड़ा होगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं है। यहां न तो रेल है और न ही मगरें। तब व्यक्ति यह सोचने को मजबूर हो जाता कि फिर इस गांव का नाम रेलमगरा कैसे पड़ा?

रेलमगरा के नामकरण के पीछे बड़े बुजुर्गों की तीन प्रमुख किवदंतियां है। पहली यह कि पास ही बनास नदी है, जिसके पानी का रेला (बहाव) गांव से करीब 2 किमी. दूर तक बहता था, जो नजदीकी सिन्देसर कला पर छोटी पहाड़ी तक टकराता था। इसीलिए रेला व मंगरा (पहाड़ी) से मिले जुले नाम से रेलमगरा कहा जाने लगा। दूसरी किवदंति यह है कि इस गांव के बसने के समय रेला नाम का व्यक्ति आकर यहां बस गया, जो गांव के दक्षिण-पश्चिम दिशा जो वर्तमान में नाथद्वारा मार्ग पर स्थित है, जहां उस व्यक्ति के खेत थे और उस क्षेत्र का नाम मगरा था। इस तरह रेला नामक व्यक्ति रोज खेती के लिए मगरा जाता। ऐसे में जब तक लोग आकर पूछते कि रेला कहा गया है, तो जवाब मिलता कि मगरा गए हैं। फिर समूचे क्षेत्र का नाम ही रेलामगरा रख दिया और बाद में इस नाम में सुधार के बाद रेलमगरा कहा जाने लगा।

तीसरी किवदंति यह है कि जो लोग पहले यहां आकर बसे, जिन्होंने पास ही रेले नामक छोटी पहाड़िया शृंखलाबद्ध मौजूद है। शृंखलाबद्ध पहाड़ियों से ही इसका नाम रेलमगरा रख दिया गया। हालांकि तीनों ही किवदंतियों के कोई भी सटीक प्रमाण अब तक किसी ने नहीं बताए और न ही सुनने में आए।

यह गांव संभवतया 900 से 1000 वर्ष पहले बसा होगा, लेकिन इसका कोई भी कोई प्रमाण नहीं है। मेवाड़ रियासतकाल में

भीलवाड़ा जिले के सहाड़ा के नियाबक (नायब हाकिम) का मुख्यालय रेलमगरा में ही था। उस समय इस नियामक गांव में 46 गांव हुआ करते थे। उसके बाद उदयपुर जिले में होकर तहसील मुख्यालय बना और वर्तमान में उपखंड मुख्यालय है। वर्तमान में एक रेलमगरा कस्बे की ही ग्राम पंचायत है।

पहले कहलाता था श्रीगंगानगर

रेलमगरा क्षेत्र श्री गंगानगर कहलाता था, जहां गेहूं, कपास, मक्का प्रचुर मात्रा में पैदा होता था। हालांकि आज भी पूरे राजसमंद जिले में सर्वाधिक खेती रेलमगरा उपखंड क्षेत्र में ही होती है। इस क्षेत्र को रियासतकाल से ही कृषि की दृष्टि से सम्पन्न माना जाता रहा है, मगर जब से बनास नदी पर पहले नन्दसमंद बांध व बाद में बाघेरी नाका बांध बना, तब से बनास नदी में पानी की आवक कम हो गई, जिससे कुओं का जल स्तर जो 35 फीट की गहराई तक पर्याप्त था, वहां अब एक सौ फीट पर भी पानी का टोटा है। इस कारण ट्यूबवैलों का प्रचलन आम हो गया है। बिजली 1969 में ही आ गई थी, जिससे कुओं पर मोटरें लगी, जो अब नकारा पड़ी है। इस कारण गंगानगर कहलाने वाला रेलमगरा अब रेगिस्तान का स्वरुप लेता जा रहा है। इससे महाजन ही नहीं, हर जाति वर्ग का व्यक्ति महाराष्ट्र, गुजरात सहित दक्षिण भारत में जाकर व्यवसाय व नौकरी कर रहा है।

रेलमगरा में पशु चिकित्सालय की जमीन पर नवनिर्मित बस स्टैंड व ग्राम पंचायत द्वारा बनाई गई दुकानें। रोशनलाल टुकलिया

प्रमुख तीर्थ स्थल

रेलमगरा में स्थित चावंडा माताजी की श्रृंगारित प्रतिमा।

रेलमगरा में चामुंडा माता मंदिर है, जो कस्बे का प्रमुख आस्था स्थल है। इसी तरह चारभुजानाथ मंदिर, जैन मंदिर भी खास है। फतहनगर रोड विद्युत निगम कार्यालय के पास शिव मंदिर है, जिसकी नींव तत्कालीन विद्युत निगम सहाक अभियंता बोहरा (मुसलमान) ने रखी थी, जिसकी प्रतिष्ठा के समय ऑल इंडिया रेडियो ने साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रतीक बताकर समाचार प्रसारित किया था। कस्बे में महाजन, ब्राह्मण, जाट, गाडरी, रेगर, मुसलमान समाज के सर्वाधिक लोग है। इसके अलावा प्रजापत, तेली, भील, चमार, सांसी, हरिजन, नाई भी समाज के लोग भी है।

राजनीतिक परिदृश्य

रेलमगरा में रामेश्वर महादेव का मंदिर

राजनीतिक दृष्टि से रेलमगरा की विचित्र स्थिति है। परिसीमन से पहले रेलमगरा मावली विधानसभा में था और अब नाथद्वारा विधानसभा में है। रेलमगरा उपखंड क्षेत्र की 24 पंचायतें नाथद्वारा व 15 पंचायतें राजसमंद विधानसभा क्षेत्र में है। इस कारण रेमलगरा व आस पास का क्षेत्र दो पाटन के बीच फंस गया, जिससे समुचित विकास भी नहीं हो पाया। वर्तमान में डॉ. सीपी जोशी विधायक है, जो राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष भी है, जबकि राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी है। अब उपखंड मुख्यालय होने से सभी उपखंड स्तरीय कार्यालय तहसील, मंसिफ मजिस्ट्रेट, ग्राम न्यायालय, सार्वजनिक निर्माण विभाग, जल संसाधन विभाग, विद्युत निगम, शिक्षा, सर्व शिक्षा, मॉडल स्कूल, कस्तुरबा गांधी आवासीय स्कूल, रेफरल हॉस्पीटल, आयुर्वेद अस्पताल, पंचायत समिति सहित ब्लॉक स्तरीय कार्यालय है। साथ ही एसबीआई, बैंक ऑफ बड़ौदा, ग्राम सेवा सहकारी समिति, कॉपरेटिव सोसायटियां भी है।

शिक्षा संस्थान कम, फिर भी अव्वल प्रतिभाएं

शिक्षा सुविधा के नाम पर पहले यहां उच्च माध्यमिक विद्यालय तक था, जहां 11वीं तक की पढ़ाई होती थी। उसके बाद कस्बे के साथ क्षेत्र के छात्र उच्च शिक्षा के लिए नाथद्वारा या उदयपुर जाकर पढ़ाई करना ही एकमात्र विकल्प था। खेती कम होने से सरकारी नौकरी के प्रति उत्सुकता बढ़ी, जहां पटवारी, शिक्षक के साथ उह्चच्च पदों पर भी पहुंचे, जिनमें मोहनलाल मेहता जो अमरीका में पब्लिक एकाउंटेंट पद पर रहते हुए बिल क्लींटन के नजदीकी मित्र भी रहे। इसके अलावा इस गांव ने चिकित्सक डॉ. पुष्कर सोनी, डॉ. रमेश रजक, प्रोफेसर सुरेश मेहता, मुंसिफ मजिस्ट्रेट, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन पद पर भी डॉ. बद्रीलाल जाट रहे। आईएएस, आईपीएस कोई नहीं बन पाया। चार्टेट एकाउंटेंट (सीए) के क्षेत्र में प्रथम सीए का गौरव रौनक कुमार टुकल्या को प्राप्त हुआ। उसके बाद तीन अन्य भी सीए बने है। वर्तमान में शिक्षा की दृष्टि से एक निजी जेआर महाविद्यालय, राउमावि, राबाउमावि के साथ 15 निजी विद्यालय संचालित है। निजी आईटीआई भी है। इसके अलावा सरकारी आईटीआई का भवन बन रहा है, जहां जल्द ही प्रारंभ होने की उम्मीद है।

यहां का मुख्य व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से यह गांव बहुत पिछड़ा था, जहां केवल किराणा व कपड़े का व्यवसाय ही था, मगर विद्युतीकरण के बाद मोटर पम्प की दुकानें लगने लगी। तहसील व अन्य सरकारी कार्यालय गांव के बाहर होने से मुख्य बाजार उजड़ सा गया। सभी गांव के बाहर मुख्य मार्ग पर आ गए, जहां धीरे धीरे नजदीकी दरीबा खदान एवं वर्तमान में एसके माइंस जो गांव से करीब 4 किमी. दूर है, जहां हिन्दुस्तान जिंक (वेदांता) द्वारा प्रचुर मात्रा में चांदी, जस्ता निकल रहा है व पास ही प्लांट लगाने से हजारों लोगों को रोजगार भी मिला। इससे रेलमगरा का बाजार उदयपुर के बापू बाजार व मुंबई की चौपाटी बन गया, जहां करीब 350 दुकानें व इतने ही केबिन लग गए। यहां कपड़ा, किराणा, इलेक्ट्रीक, ज्वेलरी, प्लाईवुड, सेनेट्री, लोहा भंडार, मोटर पार्ट्स, दुपहिया वाहन शोरूम, चार पहिया वाहन शोरुम, मशीनरी सहित कई होटल भी हैं।

रेलमगरा का विकसित बाजार

परिवहन की सुविधा

रेलमगरा परिवहन की दृष्टि से हमेशा महरूम रहा है। तिजारा-उदयपुर व अलवर से उदयपुर के अलावा वाया रेलमगरा से लंबी दूरी की कोई रोडवेज बस नहीं है। अक्सर लोगों को निजी वाहनों से ही टुकड़ों टुकड़ों में यात्रा करनी पड़ती है, जबकि यहां पर मुंबई, गुजरात तक के लोग व्यवसायरत है। हिन्दुस्तान जिंक में देशी ही नहीं, विदेश भी कार्मिक भी है, जिन्हें आवाजाही में काफी असुविधा होती है।

गांव से शहर की सूरत में बदलता रेलमगरा

एक दशक में हुआ बड़ा परिवर्तन

जयवर्द्धन न्यूज @ रेलमगरा

liverajsamand.com

रेलमगरा ग्राम पंचायत जो उपखंड मुख्यालय के अंतर्गत आती है, जहां सभी उपखंड स्तरीय कार्यालय है। ऐसे में विकास होना अवश्यसंभावी है। वर्तमान में सरपंच निशा जाट है, उससे पहले इनके पति प्रकाश चौधरी थे, जो वर्तमान में कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष भी है। इन्होंने अपने कार्यकाल में आबादी क्षेत्रों में सीसी सड़कों का निर्माण प्राथमिकता से कराया। इसके अलावा बस स्टैंड पर गांधी सर्कल का निर्माण कराया।

ग्रामीणों एवं व्यापार मंडल की मांग पर बस स्टैंड निर्माण के लिए पशु चिकित्सालय की पड़त जमीन को बस स्टैंड का स्वरूप दिलाया और हिन्दुस्तान जिंक की मदद से बस स्टैंड का निर्माण करवाया। वहां करीब 53 दुकानें न सिर्फ बाजार विकसित किया, बल्कि कई लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया। डॉ. सीपी जोशी के प्रयास से मोटर ड्राइविंग इंस्टीट्यूट खोला गया और पास में खेल स्टेडियम का निर्माण कराया। कस्बे में बंद पड़ी रोड लाइटों को चालू करवाया और मुख्य चौराहों पर बड़ी लाइटें लगवाई गई। विशेष रूप से अलग अलग जाति, समाज के श्मशान घाट का नवनिर्माण कराया। उपखंड बनने के बाद राष्ट्रीय पर्वों को मनाने में ग्राम पंचायत की अहम भूमिका रही।

स्वच्छता अभियान के तहत गली मोहल्लों के मुख्य मार्गों पर ट्रेक्टर चलाकर कूड़े कचरे का व्यवस्थित निस्तारण किया जा रहा है। आजादी के बाद से गणतंत्र दिवस पर भरने वाला मेला अब काफी उन्नत हो गया है।

मेले में बड़ी तादाद में बाहर से व्यापारी स्टालें लगाते हैं, मनोरंजन के लिए डोलर, चकरी, झूले, मौत का कुआं भी लगते हैं। इससे आस पास के गांवों से सैकड़ों की तादाद में लोग आने लगे हैं। चार किमी. दूर वेदांता की एसके माइंस खुलने के बाद रेलमगरा कस्बे की आबादी का काफी विस्तार हुआ है और बाजार भी उसी रफ्तार बढ़ रहा है। कभी गांव सा दिखने वाला यह रेलमगरा अब नगर का रूप लेने लगा है। रेलमगरा के समग्र विकास में सरपंच निशा जाट के साथ उनके पति प्रकाश चौधरी की अहम भूमिका है।

Reg. No. : 117/2018 RJRJ525447

A Modern Progressive Institution Run By Jai Kashi Seva Sansthan, Rajyawas

High Peak Academy

An Exclusive English Medium School

Salient Features

- Qualified, Dedicated and Inspiring Faculty
- Transport Facilities available
- Well Furnished Classrooms
- Creating English atmosphere and providing quality education
- Providing basic computer knowledge
- Pure Aquaguard Drinking Water
- Playground for physical development
- CCTV Coverage
- Regular inter-house competition for the development of competency
- Personal and intensive care on slow learner

IDEALS OF HIGH PEAK ACADEMY

RAGHAV SHARMA | DIVYANSH BHATI | DIVYANSH SONI | KALU NATH YOGI | CHAWAND SINGH

RESULT OF CLASS 5th IN ACADEMIC YEAR 2018-19
Total Students 5

Note : School Provides Free Admission Facility for 25% Students as per RTE Act. 2009

Near Mela Ground, Railmagra, Distt. Rajsamand

HITESH SHARMA : 9461016010
ASHISH JAIN : 9079829150
E-Mail : jashish262@gmail.com

रेलमगरा हेल्पलाइन

अग्निशमन केंद्र दरीबा	02952-265275	265134
श्रीमती दीया कुमारी, सांसद		98293-55262
डॉ. सीपी जोशी, विधायक नाथद्वारा		98290-766778
श्रीमती किरण माहेश्वरी, विधायक राजसमंद		94141-59111
श्री अरविंद पोसवाल, जिला कलक्टर		96642-22065
श्री चन्द्रशेखर भंडारी, उपखंड अधिकारी		95303-22018
कार्यालय 02952-267900		94148-32524
श्री सुंदरलाल बम्बोड़ा, तहसीलदार रेलमगरा 267228		95303-22019
श्री जगदीशचंद्र श्रोत्रिय, नायब तहसीलदार रेलमगरा		94147-40384
श्री भंवरलाल विश्नोई, विकास अधिकारी रेलमगरा		95303-08674
पंचायत समिति 02952-267800		94144-71117
श्री योगेश व्यास, थाना प्रभारी रेलमगरा 267234		95304-34587
श्री डालचंद मेनारिया, सीबीईओ रेलमगरा 267848		95877-92081
श्रीमती मिनाक्षी यादव, प्रधानाचार्या रेलमगरा		91167-75207
श्री हीरालाल सालवी, एईएन सार्वजनिक निर्माण विभाग		98293-15798
श्री चतरसिंह, एईएन जलदाय विभाग		94146-84815
श्री .... एईएन विद्युत निगम 267224		94133-91834
श्री नितेश लोधा, एईएन विद्युत निगम गिलूंड		94131-30684
श्री मनोज शर्मा, जेईएन जलदाय विभाग 234619		80586-84988

डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा, ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी	91669-34848
डॉ. तारकेश्वर गुप्ता, आयुर्वेद विभाग रेलमगरा	98286-23568
डॉ. घनश्याम मुरोड़िया, पशुपालन विभाग	94141-71889
श्री लक्ष्मीलाल, पशुपालन विभाग रेलमगरा	91667-18931
श्री नितिन शर्मा, उप कोषाधिकारी रेलमगरा 267850	95303-22019
श्री देवेंद्र सुखवाल, ब्लॉक समन्वयक पंचायत समिति	97997-21125
जतन संस्थान रेलमगरा	76650-08086
श्री संजय गौतम, ड्राइविंग इंस्टीट्यूट रेलमगरा	98104-05440
श्री रोशनलाल टुकलिया, रेलमगरा	94149-27728
श्री प्रकाश चौधरी, पूर्व सरपंच व कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष	94130-12355
श्री नन्दलाल सिंघवी, जिला परिषद सदस्य	94143-54215
श्री बोथमल जाट, मंडल अध्यक्ष	97995-13638
श्रीमती निशा जाट, सरपंच रेलमगरा	94130-12355
श्री .... सचिव रेलमगरा	98287-90317
जेआर महाविद्यालय रेलमगरा 02952-267766	94138-30841
श्री .... प्राधानाचार्य राबाउमावि रेलमगरा	02952-267498
श्री .... प्रधानाचार्य, राउमावि रेलमगरा	02952-267005
स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल रेलमगरा	94607-00333
प्रगति स्कूल, रेलमगरा	97840-38598

माधवलाल सेवदा
अध्यक्ष

किसानों के हित की रक्षा असली बीज खाद एवं ऋण के लिए सदैव तत्पर, समिति सदस्य बने सहकार योजना का लाभ उठावें।

भैरूलाल शर्मा-उपाध्यक्ष

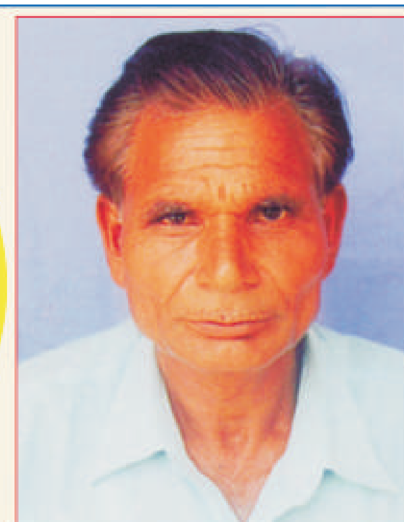

मांगीलाल जाट
व्यवस्थापक

संचालक मंडल सदस्य :- ओमप्रकाश ढीलीवाल, राधेश्याम तेली, मदनलाल गाडरी, माधवलाल सेवदा, शंकरलाल जाट, सोहनलाल भील, शंकरलाल जाट, लक्ष्मीलाल सरगड़ा, राज कंवर

ग्राम सेवा सहकारी समिति, रेलमगरा
पंचायत समिति रेलमगरा, जिला-राजसमंद

हाई पिक स्कूल, रेलमगरा	94610-16010	90798 29150
श्री रूपम इंटरनेशनल स्कूल, रेलमगरा		63760-29425
गरिमा स्कूल, रेलमगरा		94609-42521
एसडी मेमोरियल स्कूल एंड होस्टल		96676-35724
पवन स्टेशनर्स, रेलमगरा		99290-88387
संजय कम्प्यूटर्स, रेलमगरा	267687	94149-27326
डॉ. नीरज आचार्य **जीवन ज्योति क्लीनिक,** रेलमगरा		94606-32683
डॉ. स्वाति आचार्य, जीवन ज्योति डेंटल क्लीनिक		94606-32683
रॉयल कम्प्यूटर, रेलमगरा		90244-14509
एसबीआई बैंक, पंचायत समिति के पास रेलमगरा		02952-267222
एसबीआई बैंक, चावंडा माता मंदिर के पास रेलमगरा		02952-267122
उदयपुर सेंट्रल कॉपरेटिव बैंक शाखा रेलमगरा		02952-267223
मरूधरा ग्रामीण आंचलिक बैंक		02952-267291
हिन्दुस्तान डीजल पेट्रोल पम्प, दरीबा मार्ग रेलमगरा		96725-20567
पेट्रोल पम्प कुरज मार्ग, रेलमगरा		02952-267233
पेट्रोल पम्प, कांकरोली मार्ग		02952-267305
बीएसएनएल रेलमगरा		02952-267000
डाकघर रेलमगरा		02952-267240
ग्राम सेवा सहकारी समिति रेलमगरा		98297-25217
नोटेरी पब्लिक, एडवोकेट मुकेश टुकलिया		94146-85492
एडवोकेट किशनलाल जाट, रेलमगरा		94146-85849
एडवोकेट पृथ्वीराज पुरोहित		94137-72718
एडवोकेट जगदीश कुमावत		94142-89379
एडवोकेट सुरेश चौधरी		94149-27757
डायग्नोस्टिक सेंटर, रेलमगरा		94149-27533

रेलमगरा का बाजार

हर्ष इलेक्ट्रोनिक्स	02952-267244	94146-81940
अनिल लोहा भंडार, रेलमगरा		94139-75525
कल्याण ऑटोमोबाइल रेलमगरा		94147-57080
अपना बाजार, रेलमगरा		99287-49919
अरिहंत प्लाईवुड, रेलमगरा		85600-36119
तरूण इलेक्ट्रीकल्स,		95217-89385
बोहरा मोटर्स		94146-20981
दिलीप किराणा		83860-31787
स्टाम्प वेंडर : दिलीप लोढ़ा		99298-24372
इकबाल शटर वाला		98287-44383
ज्योतिषाचार्य इन्दरमलजी जाट		99280-45062
अग्रवाल फर्नीचर		94146-85600
रजा एम्पोरियम		94146-85688
गिरीराज सर्राफा		63505-47073
हीरा रेडिमेट		97838-43642
नाकोड़ा स्टोन		94146-85494
किशन अहीर, ट्रेवल्स		90016-16976
लाला ट्रावेल्स		97841-96205
सोनी इलेक्ट्रीकल्स		94147-56921
मनोहर ज्वैलर्स		94149-27351
धनोप ट्रावेल्स		94149-28111

नवीन स्टाल	99280-20139
महता पुस्तक भण्डार	94149-27278
राजेन्द्र मोबाइल	85618-31444
जय मेटल्स	88757-80050
रॉयल कम्प्यूटर्स	90244-14509
शक्ति ग्लास	91661-59798
शंभू चायवाला	96105-87741
न्यू श्याम टेन्ट	97721-25272
विष्णु इलेक्ट्रीक	97838-44355
हीरो ऑटोमोबाइल	96024-92566
प्रकाश किराणा	94149-27252
संजरी रेडीमेट	96601-80422
कोठारी गारमेंटस	97834-59088
दीपेश श्रृंगार	97844-75398
महता सीमेंट	98291-22801
श्रीराम एम्पोरियम	77425-02627
भैरूनाथ प्लाईवुड	81045-36475
जगदम्बा कलेक्शन	88752-83457
शिव टायर एजेन्सी	91667-18429
मनीष ज्वैलर्स	94133-13602
महता कृषि भण्डार	94147-12191
सोमानी मेडिकल	94147-32771
पकंज जनरल स्टोर	94149-27290
महालक्ष्मी स्टील	94149-27404
विनायक ट्रेडर्स	94149-27453
सेठिया पुस्तक भण्डार	96100-35506
कृष्णा साड़ी सेंटर	96368-91789
महादेव वाटर	97846-53281
भैरूनाथ नमकीन	99820-46096
महावीर ट्रेडर्स एण्ड प्रेम पब्लिसीटी	94149-27728
नीलकमल इन्फोटेक	94601-13389

जयवर्द्धन की वार्षिक सदस्यता मात्र 200 रुपए में

रेलमगरा क्षेत्र में जयवर्द्धन पत्रिका की सदस्यता, खबर व विज्ञापन प्रभारी

रोशनलाल टुकलिया
94149-27728
प्रेम पब्लिसिटी

राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर के साथ सभी अखबारों में विज्ञापन के लिए भी सम्पर्क करें।

तालाब की बदहाली से पेयजल संकट

रेलमगरा. एक समय प्रचुर मात्रा में पानी केकारण सरसब्ज रेलमगरा इन दिनों पेयजल के लिए चार-पांच दिनों के अंतराल के लिए मोहताज है। उपखंड मुख्यालय के इकलौते तालाब की बदहाली ही पेयजल संकट का बड़ा कारण है।

यह तालाब पेयजल के साथ वर्षभर आमजन के लिए नहाने, कपड़े धोने के काम आता था। अब इस तालाब का भरना तो मानो सपना हो गया है। अब तो इसका स्वरूप ही बदल दिया गया है। जब से तालाब के पीछे सर्वप्रथम तहसील भवन का निर्माण हुआ, तब से इसकी पहचान धीरे धीरे खत्म होने लग गई। भवन बनने के कारण जब तालाब पूरा भर जाता तो तहसील परिसर में पानी भरने लग गया, तब इस तालाब की मूल रपट को तोड़ दिया गया। इससे पानी रूकना हो गया। कालान्तर में थोड़ा- बहुत पानी और रूकता, किन्तु जहां रपट थी, जिसे तोड़ा गया था। वहां विद्यालय का निर्माण बहाव क्षेत्र में कर दिया गया, जिससे पानी पुन: तहसील परिसर तक फैलने लग गया, तो जहां पानी की भराव क्षमता थी। उस पाल को तोड़ रपट बना दी गई, जिससे पानी रूकना बंद हो गया व बहकर आगे चला जाता है। प्राथमिक विद्यालय बनने के बाद दिनोंदिन तालाब पेटे में निर्माण कार्य चालू हो गए, जिससे तालाब का स्वरूप खत्म हो गया। आज भी अतिवृष्टि के समय खतरा बना रहता है। तालाब की बदहाली के कारण ही कस्बे में पेयजल संकट होना प्रारंभ हो गया। तालाब के कारण जलदाय विभाग एक मात्र कुएं से सप्लाई कर देता। अब वह कुआं वीरान हो गया है। तालाब के भरे रहने से स्थानीय सहित जीवाखेड़ा, लाठिया खेड़ी, मोर्रा, सिन्देसर के कुओं का जल स्तर उच्च स्तर पर भरा रहता, जिससे यह क्षेत्र सरसब्ज रहता था। वर्षपर्यंत सिंचाई के लिए भी पानी उपलब्ध रहता था। अब सुखने से किसानों को व्यवसाय के लिए पलायन करना पड़ रहा है। खेतीहर किसान बेरोजगार होकर फिर रहे हैं।

तालाब के ऊपरी छोर पर छोटी छोटी खदाने थी, जहां अब आबादी बस गई है। उनके भरे रहने से कुओं का जल स्तर हमेशा ऊपर रहता था। विगत वर्षो में हुए पेयजल संकट के समय भी चावंडा माता मंदिर के पास वाली खदानों के पास जलदाय विभाग द्वारा ट्यूबवैल खोद कर पेयजल उपलब्ध कराया जाता है। खदानें एक बार भर जाने के बाद वर्ष पर्यंत ट्यूबवैल चलती थी, किन्तु कालान्तरह्व में खानों में आने वाले बरसाती पानी को अवरोधकों के माध्यम से बंद कर दिया, जिससे ट्यूबवैल भी सुख गई व तालाब में पानी की आवक कम हो गई। इस कारण कस्बे के कुएं- बावड़ी सीखुए गए तथा कहीं कहीं तो उन्हें एक तरह से बंद भी कर दिया गया। उन कुएं-बावड़ियों पर कतिपय लोगों ने कब्जे कर लिए हैं।

सरकार पानी बचाने के लिए नाड़ियों का निर्माण कर गांव का पानी गांव में ही रोकने की योजना चला रही है। ऐसी स्थिति में स्थानीय एवं प्रशासन को किसी तकनीकी अधिकारी से इस तालाब में अब भी पानी कैसे रूके, इस योजना पर विचार किया जाना चाहिए, ताकि पेयजल संकट से राहत मिल सके और क्षेत्र में फिर खेती को बढ़ावा मिल सकें।

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर के साथ सभी अखबारों में **विज्ञापन** प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान

शक्ति एडवरटाइजिंग

सभी प्रकार की खेलकूद सामग्री मिलने का राजसमंद में एकमात्र स्थान

शक्ति स्पोर्ट्स

शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

An ISO -9001:2015 M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)
पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
GST/Tally ERP

SHiNE

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

भगवान नहीं, अब आकाओं के नाम पर लूट मचा रही है भिखारियों की जमातें

नवाचारों से कमा खा रही है मंगतों की जमात

मांगने वालों की दुनिया में अब खूब सारे बदलाव आ गए हैं। पहले हर मांगने वाला भगवान के नाम पर, अल्लाह के नाम पर मांगा करता था और सभी के सामने यही कहकर निकलता था– जो दे उसका भला, जो न दे उसका भी भला।

अब हालात बदल चुके हैं। मांगने वालों की जनसंख्या बढ़ने लगी है। धर्मस्थलों या दूसरे सार्वजनिक स्थलों, सर्कलों, अस्पतालों, धर्मशालाओं और चौराहों तक पर जमा मांगने वालों की कतारें और परिभ्रमणरत मांगने वालों सभी की स्थितियां लगभग एक जैसी ही रही हैं। सारे के सारे जो कुछ मांग रहे हैं वे या तो भगवान के नाम पर मांग रहे हैं या अल्लाह के नाम पर। और साथ में हर वक्त यही उद्घोष कि दे उसका भला, न दे उसका भी भला।

इन लोगों के लिए भगवान के नाम पर जो कुछ मांगा जाता है, उस भगवान को ही हाजिर– नाजिर मानकर सभी के लिए अच्छा ही अच्छा कहा जाता है। कोई दे न दे, सब तरफ यही उद्घोष गूंजता ही रहता है। किसी से कोई प्रतिशोध या गुस्सा नहीं, सब कुछ लेन-देन होता रहा है भगवान के नाम पर। और जो कुछ भगवान के नाम पर होता है उसमें किसी का कुछ भी बुरा नहीं होता। जो दे उसका भला भी भगवान करता है और जो न दे उसके लिए कोई बात नहीं।

न कुछ बुरा होगा, न बुरा होने की कल्पना की जा सकती है। जो कुछ करना है, वह भगवान को करना है। जब भगवान के नाम पर मांगने वाले मांगते हैं, तब किसी को कुछ नहीं सोचना या करना पड़ता। पर आज हालात बदले हुए हैं। आजकल भगवान पर किसी को भरोसा नहीं रहा। अब भगवान को भुला चुके हैं और खूब सारे लोग खुद भगवान हो चुके हैं। हमारे आस- पास खूब सारे लोग हैं जो अपने आपको भगवान मान या मनवा चुके हैं।

इन्हीं भगवानों की संख्या के अनुपात में किसम- किसम के मांगने वाले सर्वत्र पसरते जा रहे हैं और ये मांग भी रहे हैं तो उन लोगों के नाम पर जो उनके अपने भगवान हैं। आजकल मांगने वाले कहीं भी पाए जा सकते हैं। इनके लिए यह जरूरी नहीं कि कोई निश्चित स्थान ही तय हो और ये कुछ भी मांग कर सकते हैं।

वो जमाना चला गया जब आदमी बिना पुरुषार्थ के कहीं भी किसी से कुछ भी नहीं लेता था और जहां से कुछ लेता था वहां कुछ न कुछ पुरुषार्थ करता ही था और उसके बाद ही परिश्रम का फल प्राप्त करता था। उसे बिना परिश्रम या भावना के कहीं से कुछ भी प्राप्त करना गंवारा नहीं था और यही कारण था कि पुराने जमाने में मांगन से मरना भला जैसे शब्दों का प्रयोग खुल कर होता था।

जो मांगने वाले इंसान के नाम पर मांगते हैं, वे कभी भी भगवान या अल्लाह के नाम पर नहीं मांगते। ये अपने आकाओं के नाम पर मांगते हैं और इस तरह मांगते हैं जैसे कि मांगने के लिए ही पैदा हुए हैं और बिना मांगे ये एक दिन नहीं रह सकते। फिर मांगेंगे भी ऐसे कि जैसे मांगना इनका जन्मसिद्ध अधिकार है और मांगना ही एकमेव कर्त्तव्य कर्म रह गया है, जिसके बिना ये जी नहीं सकते। मांगने का अधिकार इस किस्म के लोगों के लिए वो नैसर्गिक अधिकार है, जिसे आने वाले समय में कभी कानूनी मान्यता पाने के लिए कोई बड़ा संघर्ष हो सकता है।

आने वाले समय में कोई बड़ी क्रांति होगी, तो उन लोगों द्वारा की जाएगी जो मांगने के कर्म को ही अपने जीवन का परम लक्ष्य मान बैठे हैं। ये मांगने वाले भी अजीब किस्मों के हैं, जो इंसानों के नाम पर मांगते हैं और यहां तक कहने और करने का साहस रखते हैं कि जो दे उसका भला, जो न दे उसका बुरा। फिर किसी का बुरा करना हो तो इन मांगने वालों को कोई शरम नहीं है।

मुंहमांगी भीख दो तो खुश और न दो तो हर किस्म का बुरा करने को हमेशा हर क्षण तत्पर। आजकल हर तरफ इन खतरनाक किस्मों के भिखारियों का चलन चल पड़ा है। हर कोई भिखारी किसी न किसी के नाम पर मांग रहा है और मांग भी ऐसे रहा है कि जैसे कि लेना उसका अधिकार है और देना हमारा।

जो कुछ मांगे, दे दो, ना न कहें, वरना भला होना तो दूर, कहीं बुरा हो सकता है और इसके लिए तैयार रहें। खूब सारे इंसान भगवान बने हुए हैं और मांगने वालों की संख्या का तो पार ही नहीं है, सारे के सारे मांग रहे हैं अपने- अपने भगवानों के नाम पर।

डॉ. दीपक आचार्य
लेखक, व्यंग्यकार

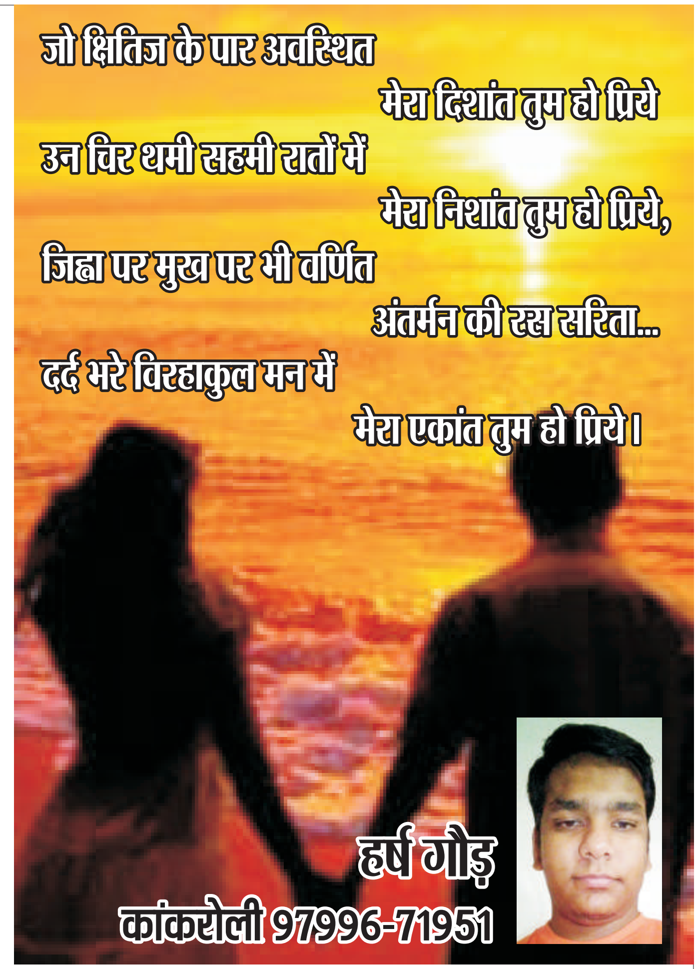

तीस साल बाद

दिव्या लेखन में अभी तक बहुत नाम कमा चुकी है। उसकी कहानी में बहुत आकर्षण होता है। प्यार की हो, समाज की किसी भी बुराई हो या कोई साधारण सा विषय हो, उसकी लेखन की शैली अद्‌भुत है। जो भी उसकी कहानी को पढ़ ले, बिना उसकी लेखनी का कायल हुए नहीं रह पाता।

उसको लिखते हुए उसकी उम्र के 30 साल निकल गए। आज दिव्या सुबह से राकेश जी को ढूंढ़ रही है। साथ ही बोलती भी जा रही है। आज ये राकेश बुढ़ा बिना बोले कहा गए। मालूम है मेरी कहानी लिखनी है, इसलिए बिना बोले बचने के लिए गायब हो गए। उम्र के साथ यादाशत भी कमजोर हो गई।

हे भगवान! मेरा ये चश्मा, इसको भी आज ही टूटना था। दिव्या का पोता राधे आकर बोलता है- दादी, दादाजी तो सुबह सुबह बाहर बाजार गए हैं। बोल रहे थे बहुत ज़रूरी काम है।

उफ़! मेरी कहानी से भी जरूरी काम, आने दो उस बुड्ढे को बताती हूं। राकेश जी के बाहर से आते ही दिव्या का गुस्सा निकलता है। कहा गए थे...। उम्र के साथ बाते भी भूल रहे हो। तुमको मालुम था ना कि मेरी कहानी तुमको लिखनी है। मेरा चश्मा टूट गया है। अब सिर्फ एक घंटा है, लिखने और भेजने का। तुम तो लिखते भी धीरे हो। हाय मेरी कहानी...। अरे मेरी बुड़ी दिव्या सुन तो...।

अपनी आंखे तो बन्द कर...। वाह! यहां कहानी का समय खत्म हो रहा है और आप को मजाक करने की लगी है। तुम मेरी बात मानों तो... लो करी बंद आंखें। हम्म... अब खोलो। ये तो नया चश्मा है। हां, टूट गया था। बच्चों ने बोला तो मैं तुरंत बनवा लाया, तुम्हारी कहानी अब तुम खुद लिखोगी। बच्चे खड़े खड़े प्यारी नोक झोंक को देख सुन हंस रहे, जोर जोर से ताली बजा रहे हैं।

सारिका औदिच्य
जयपुर

कोरा आसमान

कोई खास फर्क नहीं पड़ा दोस्त,
क्या हुआ जो हमने रास्ते बदल लिए
ये तो होना ही था
क्योंकि तुम गांव की झोंपड़ी नहीं
शहर की आलिशान इमारत थे।
एक महत्वाकांक्षी किताब के
सुनहरे पन्ने की इबारत थे।

और मैं एक कोरा आसमान था
जिसके तले धरती थी, पहाड़ थे, फूल थे
मैं एक ऐसा दरख्त था
जो अन्दर से नर्म पर बाहर से सख्त था।

मेरी कविताएं
कविताएं तो दोस्त तुम्हें बेहद पसंद थी
तभी तो मैने जब-जब भी
भावनाओं को तलकर पुड़ी
और विचारों को उबाल कर छोले बनाए
तुमने कितने चटकारे ले ले कर खाए

कवि के घर की तरह
भयानक सुन्दरता लिए
मैं एक बियाबान जंगल था
अगर तुम अपनी राह अलग नहीं बनाते
तो सचमुच इस जंगल में भटक जाते

और आज तुम जहां भी हो
सोचता हूं तुम बहुत ही सुखी हो
और सच कहुं तो दुखी में भी नहीं
मेरा आसमान अब पहले से ज्यादा रंगीन
और किरदार ज्यादा संगीन

कविताएं, शायद कभी भूले भटके पढ़ लो
या सुन लो तो जानोगे
मैं अब सिर्फ तुमसे कविताओं में ही
मिलकर
बस कविताओं में ही रम गया हूं
खुश मिज़ाज तो मैं पहले भी था
अब और ज्यादा हो गया हूं।

अफजल खां अफजल
जलचक्की सलूस रोड़,
कांकरोली, राजसमंद
मो.नं.9828475288

वीर प्रताप

देश धरम ईमान बचाना, सीखो वीर प्रताप से
देश के खातिर मर मिट जाना, सीखो वीर प्रताप से
कुंभलगढ़ के पर्वत बोले, सूरज उतरा महलों में
सूर्यवंश का अंश उदय के, आंगन उभरा महलों में
भव्यभाल चमकीला चेहरा, चंचल नैना मदमाती
रोबदार आवाज गरजाती, चौड़ी छाती गदराती।
यौवन को जग जीत बनाना, सीखो वीर प्रताप से
देश के खातिर मर मिट जाना, सीखो वीर प्रताप से
मेवाड़ धरा को फिर प्रताप में, एकलिंग दिवान मिला
आन बान और शान के खातिर, काली का वरदान मिला
एक म्यान में दो तलवारें, भाला बरछी हाथों में
सुन प्रताप की अटल प्रतिज्ञा, अकबर कांपे रातों में
जुल्मों सितम से लड़ते जाना, सीखो वीर प्रताप से
देश के खातिर मर मिट जाना, सीखो वीर प्रताप से
तोपें बिन बारुद के खाली, फौंजे बिन हथियारों के
भील बिना तीरों के तरसे, वीर बिना तलवारों के
खाली देख खजाने सारे, भामाशाह ने साथ दिया
कलदारों से भरी तिजोरी, सोना हाथों हाथ दिया
बड़े बड़ों से आदर पाना, सीखो वीर प्रताप से
देश के खातिर मर मिट जाना, सीखो वीर प्रताप से
राजमहल तज दिए वीर ने, सुख से जीना छोड़ दिया
सोने-चांदी के बर्तन में, खाना पीना छोड़ दिया
मेवाड़ धरा से मुगल फौज को, जल्दी मार भगाने को
धरती पर जंगल में सोया, अपना वचन निभाने को
प्राण भी देकर वचन निभाना, सीखो वीर प्रताप से
देश के खातिर मर मिट जाना, सीखो वीर प्रताप से
अकबर बोला है, महाराणा आप हमारे पास रहो
मानसिंह से ऊंचा पद लो, आप हमारे खास रहो
मौज करो मेवाड़ के मालिक, क्यों वन में वनवास करों
देश आपका दास रहे पर, आप हमारे दास रहो
बैरी को औकात बताना, सीखो वीर प्रताप से
देश के खातिर मर मिट जाना, सीखो वीर प्रताप से

अब्दुल जब्बार
नूर निकेतन 48, कुंभानगर
चित्तौड़गढ़, 94141-09181

धरा शशि मिलन

चली वसुधा संध्या शृंगार को
उतार रही धीरे धीरे ओढ़नी
ओढ़ी थी जो प्रात: शृंगार को।
रक्त वर्ण सी देह इसकी
मानो सिन्दूर से किया स्नान हो।
चल रही है शीतल समीर
आतुर है छुने को देह धरा की
यह प्रौढ़ समीर।
शरमाई धरा पवन से
मोरनी सी चाल से
कर रहीं लक्ष्य उस अंधेरी गुफा से
सहसा कोई नजर आया
झिलमिलाती संग चुन्दड़ लाया
अद्‌भुत आभा है इसके मुख पर
इस युवक के आ जाने पर
अंधेरी गुफा में
शीतल प्रकाश छाया
ओढ़ उस चुन्दड़ को वसुधा
कर पूर्ण शृंगार
कर रही है उस शशि को
बंद अधरों से मौन प्रणाम
दूर से शशि कुछ देख न पाया
तो देखने सुन्दर मुख धरा का
मंद गति से धरा के बिल्कुल
सामने आया
लम्बी अवधी तक शशि ने
धरा का सुन्दर रूप निहारा
धरा शशि के मधुर मिलन की वेला
ने
सम्पूर्ण सृष्टि को जड़ कर डाला
शनै-शनै शशि अवसान को चला
आई अब विरह की बैला
धरा भी चली अंधेरी गुफा से बाहर
करके फिर मिलने का वादा।

आशीष जैन, राज्यावास
हाई पिक एकेडमी,
रेलमगरा 90798-29150

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
3 वर्ष	36	720	220	200 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

आम से खास गुफ्तगू

एक दिन आम को पिलपिलाकर मुंह पर छेक कर चूसने ही वाला था कि वह बड़ी जोर से चिल्ला उठा। इडियट कहीं के, फलों के राजा से मुंह लगा रहा है। आम आदमी की तरह कोई आम (सामान्य) फल खाना चाहिए था। मेरे नाम पर न जाए मेरा इतिहास इतना पुराना है, जितना मानव पुराना है। मैं उसके तेवर देखकर सन्न रह गया और हाथ उसको लिए ज्यों के त्यों ठिठक गए। मुंह खुला का खुला रह गया, जिसके कारण दांतों को कई मक्खियों के पदाघात सहना पड़ा। हिम्मते- आम को देखकर मेरी हिम्मत लाजबाब होने वाली थी कि किसी तरह हिम्मत बांधकर प्रश्न किया।

मैं आमजी! आपकी मिठास से तो भलीभांति परिचित हूं, लेकिन इतिहास से अनभिज्ञ हूं। कृपया अपनी मिठास के इतिहास को बताइए। आम अपने प्रति सम्मान का आभास कर गदगद हो गया और गला साफ कर बताने लगा। आम (मुस्की छोड़ते) मेरा इतिहास भगवान शिव से शुरू होता है। जब इंद्र ने जाल फेंककर कामदेव को बलि का बकरा बनाया, तो अनंग ने जो पांच सुमन सर चलाएं थे। उनमें से एक बाण मेरे फूल का ही था।

रामचरितमानस में गुरू विश्वामित्र और राम के बीच एक प्रसंग में बाबा तुलसीदास जी ने लिखा है कि

देखि अनूप एक अंवराई, सब सुपास सब भांति सुहाई।

आमों का एक अनुपम आम का बाग देखकर विश्वामित्र अपने स्टूडेंट राम से कहते हैं कि रघुवीर मेरा मन कहता है कि यहीं रहा जाए, क्योंकि खाने के लिए जो आम हैं। महाभारत में बेमौसम आम की डिमांड को कृष्ण और पांडव परिवार ने सच बोलकर पूर्ण किया था। कहते हैं कि बारहमासी आमों की शुरुआत महाभारत काल से इंटरनेट के जैसे हुई।

मैं आंख फाड़ कर, आप इतने ओल्ड हैं ?

आम और क्या! लगता है इतिहास बिल्कुल नहीं पढ़ाए, नहीं तो ऐसा कभी नहीं कहते। पता होना चाहिए सन् 327 ईसा पूर्व में सिकन्दर के सिपाहियों ने सिंधु घाटी में आम के पेड़ों को देखा था। संस्कृत साहित्य के महान विद्वान कालिदास के साहित्य में भी मेरा वर्णन है और ह्वेनसांग और इब्ने बतूता जैसे घुमक्कड़ों के विवरणों में भी मेरा उल्लेख मिलता है।

बाबर ने बाबरनामा में लिखा है, हिन्दुस्तान के अपने फलों में एक अम्बा (आम) है। कुल मिलाकर यहां का सबसे बढ़िया फल यही है। खाते दो तरह से हैं, एक यों कि नीचे से पिलपिलाते हैं और मुंह पर छेक करके चूसते हैं या फिर कारदी की तरह छिलका उतार कर...। हिंदवी के उस्ताद अमीर खुसरो ने मुझे देखकर कहमुकरी लिखा भी है-

बरस- बरस वो देस में आवे, मुंह से मुंह लगा रस पियावे,
वा खातिर मैं खर्चे दाम, ऐ सखि साजन! ना सखि आम।।

मैं यानी आपकी पैठ कवियों और शायरों के बीच भी है। आम (कंटीली मुस्कान के साथ) रहे बैल के बैल। मैं हिन्दी और उर्दू अदब में बाअदब मिलूंगा। फलों का बादशाह आम हर दिल अज़ीज है। शायरों और आम के बीच तो चोली- दामन वाले तआलुकात रहे हैं। बादशाहे शायरी मिर्ज़ा गालिब आमों के बेइंतहा शौकीन थे। एक बार अपने दोस्तों के साथ ग़ालिब आम खा रहे थे। उनमें से एक दोस्त आम नहीं खाता था, वह चुपचाप बैठा था। उसी वक्त कहीं से एक गधा आया और आमों के ढेर को सूंघकर चला गया, जो दोस्त आम नहीं खा रहा था, उसने मजाकिया लहजे में कहा कि देखा गधे को भी आम पसंद नहीं हैं। ग़ालिब जो अपनी हाजिर जवाबी के वास्ते मशहूर थे। उन्होंने ठहाकेदार जवाब दिया कि एकदम दुरुस्त फरमाया जनाब, गधों को आम बिलकुल पसन्द नहीं हैं। इतना सुनते ही हंसी का सैलाब आ गया।

मैं आश्चर्य से, अच्छा! आम अकबर इलाहाबादी की मेरे प्रति ऐसी दीवानगी थी कि आम के मौसम में आम के अलावा कुछ और बात करना उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं था, वे कहते थे। नाम न कोई यार को पैगाम भेजिए। इस फस्ल में जो भेजिए, बस आम भेजिए। हिन्दी के कवि तो मेरे गुणगान करते हुए हांफते नहीं हैं। मुझे देखकर उनके मुंह से लार टपकने लगती है और कलम चलाए बिना नहीं रह पाते हैं। अवधी कवि पुष्पेन्दु जैन ने एक छंद में मेरी दो किस्मों के मध्य किस प्रकार की तुलना की है और उनके नामकरण संस्कार के विषय में लिखा है।

लखनऊ का सफेदा और लंगड़ा बनारस का
यही दो आम जग में उत्तम कहायो है।
लखनऊ के बादशाह दूध से सिचायो वाको,
वाही के वंशज सफेदा नाम पायो है।
या से लड़न को बनारस से धायो एक,
बीच में ही टूटी टांग, लंगड़ा कहायो है।
कहे पुष्पेन्दु वाने जतन अनेक कीने,
तबहूं सफेदे की नजाकत न पायो है।।

मैं हंसते हुए, सच में आप महानता के अंतिम पायदान पर हैं। आम अरे भुलक्कड़ों के सरदार! इतनी जल्दी भूल गया। आम चुनाव में मेरा ही तो सलेक्शन हुआ था नॉन पॉलिटिकल इंटरव्यू के टॉपिक के रूप में। नेता और अभिनेता क्या चटखारे लेकर मेरे बारे में बतिया रहे थे। मैं भले ही आम हूं, पर खास लोगों के मुंह तक मेरी पहुंच है। मैंने कदम नहीं मुंह चूमना सीखा है।

मैं जय हो आम्र महाराज की! वाकई में आपकी महिमा अपरंपार है। आपके मुंह से आपकी गौरव गाथा सुनकर मैं कृतार्थ हो गया।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग जगद्गुरु रामभद्राचार्य
विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उत्तर प्रदेश)
टीसी पोस्ट हसवा, जिला फतेहपुर (उत्तरप्रदेश)
मो. 8604112963

इंसान से ज्यादा प्रिय हुए मोबाइल

मैं बिस्तर से उठा, अचानक छाती में दर्द होने लगा मुझ। हार्ट की तकलीफ तो नहीं है? ऐसे विचारों के साथ मैं आगे वाले बैठक के कमरे में गया। मैंने देखा कि मेरे परिवार के सभी सदस्य मोबाइल में व्यस्त थे।

मैंने पत्नी को देखकर कहा– काव्या थोड़ा छाती में रोज से आज ज़्यादा दुख रहा है, डॉक्टर को बताकर आता हूं। हां, मगर संभलकर जाना। काम हो तो फोन करना, मोबाइल में देखते देखते ही काव्या बोली और जरा सी भी मोबाइल से नजर नहीं हटाई।

मैं एक्टिवा की चाबी लेकर पार्किंग में पंहुचा, तब तक मैं पसीने से तरबतर हो गया। एक्टिवा स्टार्ट नहीं हो रहा था। ऐसे वक्त हमारे घर का काम करने वाला ध्रुव साइकिल लेकर आया। साइकिल को ताला मारते ही उसे मैंने मेरे सामने खड़ा देखा। क्यों साब! एक्टिवा चालू नहीं हो रहा है? मैंने कहा– नहीं।

आपकी तबीयत ठीक नहीं लगती साब! इतना पसीना क्यों आया है ? स्कूटर को किक इस हालत में नहीं मारते। मैं किक मारके चालू कर देता हूं। ध्रुव ने एक ही किक मारकर एक्टिवा चालू कर दिया। साथ ही पूछा– साब अकेले जा रहे हो? मैंने कहा– हां। फिर वह बोला– ऐसी हालत में अकेले नहीं जाते। चलिए मेरे पीछे बैठ जाइए। मैंने कहा तुम्हे एक्टिवा चलाना आता ह? साब! गाड़ी का भी लाइसेंस है, चिंता छोड़कर बैठ जाओ।

पास ही एक अस्पताल में हम पंहुचे। ध्रुव दौड़कर अंदर गया और व्हील चेयर लेकर बाहर आया। साब! अब चलना नहीं, इस कुर्सी पर बैठ जाओ। ध्रुव के मोबाइल पर लगातार घंटियां बजती रही। मैं समझ गया था। फ्लैट में से सबके फोन आते होंगे कि अब तक क्यों नहीं आया? ध्रुव ने आखिर थक कर किसी को कह दिया कि आज नहीं आ सकता।

ध्रुव डॉक्टर के जैसे ही व्यवहार कर रहा था। उसे बगैर पूछे मालूम हो गया था कि साब को हार्ट की तकलीफ हो रही है। लिफ्ट में से व्हील चेयर आईसीयू की तरफ लेकर गया। डॉक्टरों की टीम तो तैयार ही थी। मेरी तकलीफसुनकर सब टेस्ट शीघ्र ही किए। डॉक्टर ने कहा– आप समय पर पहुंच गए हो। इसमें भी आपने व्हील चेयर का उपयोग किया, वह आपके लिए बहुत फायदेमंद रहा। अब किसी भी प्रकार का इंतजार करना आपके लिए हानिकारक है। इसलिए बिना देर किए हमें हार्ट का ऑपरेशन करके आपके ब्लॉकेज जल्द ही दूर करने होंगे। इस फर्म पर आप के स्वजन की सही की ज़रूरत है। डॉक्टर ध्रुव को सामने देखा। मैंने कहा– बेटे, दस्तखत करने आती है? साब! इतनी बड़ी जवाबदारी मुझ पर न रखो।

बेटे तुम्हारी कोई जवाबदारी नहीं है। तुम्हारे साथ भले ही लहू का संबंध नहीं है। फिर भी बगैर कहे तुमने तुम्हारी जवाबदारी पूरी की, वह जवाबदारी हकीकत में मेरे परिवार की थी। एक और जवाबदारी पूरी कर दो बेटा। मैं नीचे लिखकर सही करके लिख दूंगा कि मुझे कुछ भी होगा, तो जवाबदारी मेरी है। ध्रुव ने सिर्फ मेरे कहने पर ही हस्ताक्षर किए हैं। बस अब और हां, घर फोन लगा कर खबर कर दो।

बस, उसी समय मेरे सामने, मेरी पत्नी काव्या का मोबाइल ध्रुव के मोबाइल पर आया। वह शांति से काव्या को सुनने लगा।

थोड़ी देर के बाद ध्रुव बोला– मैडम, आपको पगार काटने का हो, तो काटना, निकालने का हो तो निकाल दो, मगर अभी अस्पताल में ऑपरेशन शुरू होने के पहले पंहुच जाओ। हां मैडम, मैं साब को अस्पताल लेकर आया हूं। डॉक्टर ने ऑपरेशन की तैयारी कर ली है और राह देखने की कोई जरूरत नहीं है। मैंने कहा– बेटा घर से फोन था। हा साब! मैंने मन में सोचा, काव्या तुम किसकी पगार काटने की बात कर रही हो और किसको निकालने की बात कर रही हो? आंखों में आंसू के साथ ध्रुव के कंधे पर हाथ रखकर, मैं बोला– बेटा चिंता नहीं करते।

मैं एक संस्था में सेवाएं देता हूं, वे बुजुर्ग लोगों को सहारा देते हैं, वहां तुम जैसे ही व्यक्तियों की ज़रूरत है। तुम्हारा काम बर्तन, कपड़े धोने का नहीं है, तुम्हारा काम तो समाजसेवा का है। बेटा, पगार मिलेगा, इसलिए चिंता ना करना। ऑपरेशन बाद, मैं होश में आया। मेरे सामने मेरा पूरा परिवार नतमस्तक खड़ा था। मैं आंखों में आंसू के साथ बोला– ध्रुव कहां है? काव्या बोली– वो अभी ही छुट्टी लेकर गांव गया। कहता था, उसके पिताजी हार्ट अटैक में गुज़र गए हैं। 15 दिन के बाद फिर से आएगा। अब मुझे समझ में आया कि उसको मेरे में उसका बाप दिखता होगा। हे प्रभु! मुझे बचाकर आपने उसके बाप को उठा लिया।

पूरा परिवार हाथ जोड़कर मूक नतमस्तक माफी मांग रहा था। एक मोबाइल की लत (व्यसन) अपने व्यक्ति को अपने दिल से कितना दूर लेकर जाता है, वह परिवार देख रहा था।

डॉक्टर ने आकर कहा– सबसे पहले यह बताइए ध्रुव भाई आप के क्या लगते ? मैंने कहा डॉक्टर साहब, कुछ संबंधों के नाम या गहराई तक न जाएं, तो ही बेहतर होगा, उससे संबंध की गरिमा बनी रहेगी।

बस मैं इतना ही कहूंगा कि वो आपात स्थिति में मेरे लिए फरिश्ता बनकर आया था। पिन्टू बोला– हमको माफकरो पापा। जो फर्ज हमारा था, वह ध्रुव ने पूरा किया। वह हमारे लिए शर्मनाक है, अब से ऐसी भूल भविष्य में कभी भी नहीं होगी।

बेटा, जवाबदारी और नसीहत (सलाह) लोगों को देने के लिए ही होती है। जब लेने की घड़ी आए, तब लोग ऊपर नीचे या बग़ल झाकते रहते हैं। अब रही मोबाइल की बात, बेटे! एक निर्जीव खिलौने ने जीवित खिलौने को गुलाम कर दिया है। समय आ गया है कि उसका मर्यादित उपयोग करने का। नहीं तो परिवार, समाज और राष्ट्र को उसके गंभीर परिणाम भुगतने पडेंगे और उसकी कीमत चुकाने को तैयार रहना पड़ेगा।

बेटे और बेटियों को बड़ा अधिकारी या व्यापारी बनाने की जगह एक अच्छा इंसान बनाए।

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise With Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

तीखी मिर्ची

जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

जनम दुखियारा राहुल

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

मोदी के प्रचंड बहुमत से चुनाव जीतने की चारों तरफचर्चा है, मगर इनके बीच राहुल के इस्तीफे की चर्चा भी लगातार बनी हुई है। राहुल चुनाव में करारी हार के बाद लगातार अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने की बात पर अड़े हुए हैं, वहीं पार्टी के शीर्ष सभी नेता उन्हें अध्यक्ष पद पर बनाए रखना चाहते हैं। क्योंकि दूसरे कोई भी जनता के कांग्रेस के प्रति नकारात्मक मिजाज को देखकर जिम्मेदारी नहीं लेना चाह रहे हैं। कांग्रेस नेताओं को यह लग गया है कि कोई भी बड़ी कामयाबी हमें मिल नहीं पाएंगी, तो पद ग्रहण करके अनावश्यक बेइज्जती क्यों करवाए। राहुल गांधी भी लंबे समय से सबसे ज्यादा चुनाव हारने के रिकॉर्ड के साथ पार्टी में अपनी फजीहत करा चुके हैं। सभी कांग्रेसी नेता मन ही मन यह जान रहे हैं कि राहुल अपनी पार्टी को नहीं संभाल पा रहे हैं, मगर सभी राहुल की अयोग्यता और नाकामयाबी की चर्चा किए बगैर उन्हें इसके लिए भी एक कामयाब अध्यक्ष के रूप में प्रचारित कर रहे हैं।

अन्य नेताओं द्वारा उनकी संगठन शक्ति उनके युवा जोश उनकी पार्टी के प्रति निष्ठा का बखान किया जा रहा है। क्योंकि अध्यक्ष पद लेने से अभी मलाई तो मिल नहीं रही, उल्टा किसी न किसी हार का ठीकरा सिर पर फूटे इससे बेहतर है, अध्यक्ष पद से दूर रहे।

सब जगह जब कांग्रेस अध्यक्ष पद की चर्चा हुई, तो यह देख कर हमारे मोहल्ले के एक बुजुर्ग को राहुल पर बड़ी सहानुभूति हुई। कहने लगे बिचारा राहुल जन्म से ही दुखी है, न तो शादी करके अपना घर बसा पाया, न ही राजनीति में बेहतर मुकाम हासिल कर पाया। इनके बाप- दादा के कर्मों पर हमेशा दुनिया कोसती रही। कांग्रेसी नेता आजादी के बाद से ही सत्ता की मलाई खाने में मस्त रहे, मगर नाकामयाबी का दौर जो आज बना हुआ है, वह कांग्रेस ने कभी नहीं देखा। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इसी कांग्रेस की बदौलत स्वर्णिम काल बिताया, मगर उनकी बदौलत पैदा हुई कश्मीर समस्या पर बार बार राहुल को विपक्षी निशाना बनाते रहते हैं। बाद में उनकी पुत्री इंदिरा गांधी ने लंबे समय तक प्रधानमंत्री पद संभाला और अपने जीवन के उच्च सम्मान को प्राप्त किया, मगर बाद में जब उन्होंने देखा कि अब देश हमारे काबू में नहीं है, तो आपातकाल लगाया, अपने पद का जितना दुरुपयोग कर सकती थी, किया। इस आपातकाल को लेकर आज भी राहुल को ही कटू वचनों का सामाना करना पडता है।

इंदिरा के बाद राजीव गांधी ने भी प्रधानमंत्री पद का सम्मान को प्राप्त किया, मगर उनकी मृत्यु के बाद बोफोर्स घोटाले के कड़वे सच से भी राहुल को सामना करना पड़ा। सोनिया गांधी के साथ नेशनल हेराल्ड केश और जीजा रॉबर्ट वाड्रा के जमीन घोटाले पर भी टीवी वाले राहुल से सवाल जवाब करते नज़र आते हैं। राज्यों में कांग्रेस की जीत पर एक के बजाय दो दो मुख्यमंत्री के दावेदार खड़े हो जाते हैं, मगर जब हार के कड़वे घूंट को पीना हो तो सभी नेता जंगल की आग में पक्षी की तरह भागते नजर आते हैं। कहते हैं अपने बड़े बुजुर्गों के कर्मों का फल आने वाली पीढ़ी को भुगतान पडता है। बिचारे राहुल को अपने पुरखो के कर्मों पर हमेशा सफाई देनी पड़ती है। अब जब पार्टी का अध्यक्ष पद नहीं संभल पा रहा है, तो कोई भी नेता इस पद को लेने को तैयार नहीं है।

यह देखकर कर एक गजल का शेर याद आता हैं-

गम का इज़हार भी करने नहीं देती दुनिया,
और मरता हूं तो मरने नहीं देती दुनिया।

खुद का घर बेच आमजन के लिए बनवा दी धर्मशाला

भगवतीदेवी सोनी ने जनसेवा को समर्पित कर दी जिन्दगीभर की कमाई

आज जहां लोग पैसे के लिए अपने खून के रिश्ते से भी मुंह मोड़ लेते हैं, वहीं कांकरोली की एक शख्सियत अपनी जिंदगीभर की सारी जमा पूंजी जनसेवा के लिए न्योछावर कर दें। ऐसा देखने और सुनने में बहुत ही कम मिलता है। आज हम बात कर रहे हैं, सेवानिवृत्त शिक्षिका भगवतीदेवी सोनी की, जिन्होंने कांकरोली में कमला नेहरू चिकित्सालय में 60 लाख की लागत से आमजन के ठहरने के लिए धर्मशाला बनवा दी। इन्होंने इसमें अपनी जिंदगीभर की जमा पूंजी लगा दी। धर्मशाला के कार्य में जब बजट बढ़ने लग गया, तो इनके चेहरे पर जरा भी चिंता नहीं की और उन्होंने निश्चय किया कि जो कार्य शुरू किया, अब उसे पूर्ण करके ही रहूंगी। इसके लिए आमेट में स्थित खुद का मकान 35 लाख में बेच दिया।

पति चुन्नीलाल के साथ भगवतीदेवी सोनी

जयवर्द्धन साक्षात्कार में जब रिटायर शिक्षिका भगवती देवी से सवाल किया कि आखिर आपने यह सब किससे प्रभावित होकर किया, बताया कि जनवरी 2016 में उनके पति चुन्नीलाल स्वर्णकार का निधन हो गया। फिर वह कांकरोली में पीहर में रहने लगी। उनके कोई आल औलाद नहीं होने से उसके दोनों भाइयों ने कहा कि अगर वह यहां रहेगी तो संपत्ति को लेकर ससुराल और पीहर पक्ष में मनमुटाव होगा। ऐसे में वह अपनी संपत्ति ऐसे कार्य के लिए लगा दें, तामि न विवाद और न ही सम्पत्ति का दुरुपयोग होगा।

भाई बने प्रेरणा स्रोत : इस कार्य में भगवती देवी के दोनों भाई रमेश जी और हरीश जी सोनी का योगदान बहुत ही ज्यादा रहा। इस कार्य के लिए इन्होंने ही प्रेरणा दी कि मैं समाज के लिए ऐसा कुछ करूं। ऐसे में मुझे ध्यान आया कि नेहरू चिकित्सालय में मरीज व उनके साथ आने वाले लोगों को धुप, बारिश और सर्दी में छत की तलाश हमेशा परेशान करती रहती है, भटकाव की स्थिति में लोग इधर- उधर शरण लेते हैं। कई लोग पेड़ के नीचे बैठे रहते हैं। बारिश होने पर कई चाय आदि की दुकानों में सिर छुपाते हुए नजर आते हैं। यह दृश्य उन्हें विचलित कर गया और उन्होंने सोच लिया कि मैं मेरे पति स्वर्गीय चुन्नीलाल स्वर्णकार की स्मृति में धर्मशाला बनवा कर गरीब असहाय लोगों के लिए एक छाया की व्यवस्था जरूर करूंगी। इस धर्मशाला में 5 कमरे, एक रसोई घर, बरामदा, शौचालय बने हुए हैं। इस कार्य को जब उन्होंने शुरू करवाया था, तभी उन्हें गले में कैंसर हो गया। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपने बुलंद हौसले व दृढ़ इच्छाशक्ति से उदयपुर अहमदाबाद में खुद के कैंसर का उपचार करवाया और पांच छह माह बाद के इलाज ने कैंसर को भी मात दे दी। आज वह पूरी तरह से स्वस्थ है। नेहरू अस्पताल में टीबी का अस्पताल संचालित है, लेकिन वो एक कमरे में ही सीमित है। इसके लिए भगवती देवी ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से मुलाकात करके उनके द्वारा बनाए गए परिसर में टीबी अस्पताल संचालित करने के लिए लिखित में प्रार्थना पत्र भी प्रस्तुत किया है, जिससे टीबी के मरीजों को अच्छा इलाज मिल सकें और वह आराम से उसमें रह सके।

जमा पूंजी, मकान बेचने के बाद अब भगवतीदेवी हस्तिनापुर में साढ़े तीन हजार रुपए में एक किराए के मकान में रह रही है। कैंसर होने के बाद भगवती ने पीहर में रहना छोड़कर किराए पर रहना शुरू कर दिया। हालांकि उनके भाईयों का प्रेम हमेशा बना हुआ है, जो रोज आते-जाते रहते हैं। अब पेंशन के सहारे जीवन यापन करने के साथ समाज सेवा को समर्पित है। ऐसी राजसमंद की गुमनाम शख्सियत को हम दिल से सलाम करते हैं।

राहुल दीक्षित
कांकरोली

राजसमंद की सुमन बनी मिस इंडिया

राजसमंद. जिले में आमेट के आईडाणा गांव में जन्मी सुमन राव (20) पुत्री रतनसिंह राव मिस इंडिया बन गई। नवी मुंबई के बाद मिस इंडिया बनने तक का सफर डेढ़ साल में पूरा कर लिया। उनके पिता मुंबई में ज्वैलरी व्यवसायी हैं। वे सुमन को 13 महीने की उम्र में ही मुंबई ले गए थे। सुमन की पढ़ाई महात्मा गांधी एजुकेशन सोसायटी में हुई थी। बचपन से ही डांस तथा मॉडलिंग उनकी हाबी में रहा है। कथक नृत्य करने की भी शौकीन रही हैं। 14 अप्रैल को पूना में राजस्थान फिनाले के रिजल्ट में सुमन स्टेट विनर रही थीं। इसके बाद मिस इंडिया के लिए सुमन ने राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया। वे 33 प्रतिभागियों को पछाड़कर मिस इंडिया बनी हैं। कार्यक्रम मुंबई के सरदार वल्लभभाई पटेल इंडोर स्टेडियम में हुआ।

सुमन का पैतृक गांव आईडाणा में है। सुमन तेरह महीने की थी, तब ही पिता व्यवसाय करने के लिए सुमन को साथ लेकर मुंबई चले गए थे। वे कहते हैं कि सुमन अपनी काबिलियत के आधार पर आज मिस इंडिया के खिताब तक पहुंची हैं। सुमन अभी मुंबई में चार्टड अकांउंटेंट की पढ़ाई कर रही है। 1991 में रतनसिंह मुंबई अकेले गए थे। 1999 में पूरा परिवार वहां शिफ्ट हो गया। सुमन सीए सैकंड ईयर में पढ़ाई कर रही है। सीए की पढ़ाई करते हुए ही उन्होंने मॉडलिंग में शुरुआत की। डेढ़ साल पहले मिस नवी मुंबई कांटेस्ट जीती थी।

सुमन का ननिहाल मावली क्षेत्र के खाम की मादड़ी में केसरसिंह के यहां हैं। मां सुशीला कंवर गृहिणी है। उनके पिता को भरोसा है कि वो मिस वर्ल्ड का खिताब जितेगी। पिता चाहते हैं कि वह समाज के लिए रोल मॉडल बनें। सुमन आईडाणा आती रहती है। परिवार में दादा तेजसिंह, दादी मान कंवर, चाचा विजयसिंह, चाची मंजू कंवर, जितेन्द्र सिंह, चिराग सिंह आदि हैं।

खेंखरो कुटाई देतो

अमरपुरा रो अमरू मोट्यार धन्धा- मजुरी सारू बम्बोई ग्यो। आपणी आदत रे माफिक गली सूं जावतो थको खेंखरो कीदो, पण उण लुगाई माथे काई फरक नी पड्यो। वा माथो उघाड़ती थकी आपणां केशा ने संवारती रही।

अमरू आपणा छोटा सा गांव सूं बम्बोई में नवो नवो आयो हो। अमरू ने घणो अचरज व्हेतो के अठा की लुगाया लाज हरम माय कांई समझे ही कोईनी। उणरे गांव री लुगायां मांय तो मरदा रे एक खेंखारा माय ही खलबली मच जावती। कोई आगती व्हेर घुंघटो खेंचती। तो कोई आपणे माथे सूं गड्यो ओढणो ओढ़ लेवती। केई लुगायां वातां रा गप्पोड़ा लगावती वेती तो ढब जावती, जाणे जीबान रे ताळो लाग्यो। अगर मरद कांई वात पूछतो तो पडुतर देवणो जरूरी वेवतो तो बिन बोल्या ही आसरा सूं केवती। ना रे वास्ते घुंघटा माय सूं डिचकारी देवती अर हां रे वास्ते बुचकारी। मजाल है कणी औरत री गला री आवाज गली माय सुणाई देवे। पण अटे तो यो कांई है। म्हारा भोला भंडारी भगवान।

अबे ईण बाईजी ने ही देख लो। सड़क रे किनारे कोठरी अर उघाड़े डील सिनान, अठे ईज कपड़ा बदलना अर नाज नखरा करणा। और तो और आपरां टाबर ने दूध पावणों व्हे तोई सड़क रे किनार माथे पसर ने बैठ जावे। ने तो लाज ने परदो। खेखरा करता करता मारो गलो दुखवा लागो, पण देवीजी आपणा डील नरखवा माय मगन। खैर, आपणे कांई करणो? मोटी है सो मां नान्हीं सो बेटी अर बराबर वाली बेन समान। आपणी नजरां माय कांई खोट नी तो आपी क्यूं डरपां आपणो फरज तो पूरो कर दीदो। काल या यू नी समझ लेवे कि कस्यो मनख है। अन्दर- अन्दर चोरी री भांत जावे है। थोड़ोक खेंखरो कर लेवतो तो मु आड़ लेई लेवती।

ईणीज विचार माय वो गली के आगे निकळ ग्यो। पण अचाणचूक उणने याद आयो कि थेलो तो लायो ही नी। सांझे आवता वखत बजार सूं थोड़ोक सामान लावणो है। वो पाछो फरियो। अबार तक वा लुगाई आपणा बारणा माथे बैठी आपणा टाबर ने दूध पाय री ही। आदत रे माफिक वणी फेर खेंखरो कीदो। ढब ढब गुण्डे...! अमरू कोठरी सूं थोड़ीक आगे ग्यो के पाछे सू करकश बोली उण रो पीछो कीदो। एक पल माय ही करकश आवाज वाला पति देवता अमरू रे आगे आय ने अंगद री भांति अड़ ग्या।

रोज- रोज तु मेरी बीवी को देखकर काए को खांसता है? तेरा गला खराब है कि खोपड़ा? एक पड़ गया लट्ठ तो सारी गुण्डागर्दी ठिकाने लग जाएगी, समझा की नहीं? अतराक माय लुगाई भी पति देव रा बगल माय ऊबी व्हेईगी।

बोलता क्यूं नहीं गुंगा है क्या? आईन्दा कभी ऐसी हरकत की तो आंतड़िया बाहर निकाल दूंगा। जा अब भाग जा सामने से। अमरू बिचारों कांई बोले ? वो फाटी आंख्या सूं उण मिया-बीबी ने देखतो देखतो कोठरी में परो ग्यो।

नारायणसिंह राव 'निराकार'
साहित्यकार, आईडाणा राजसमंद

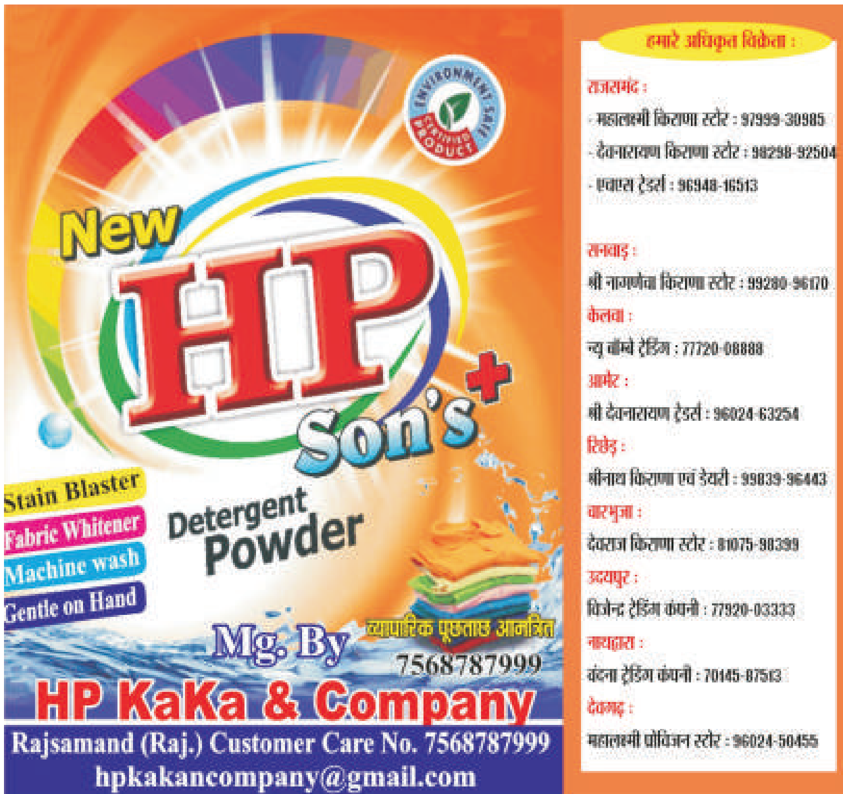
New
HP
Son's
Stain Blaster
Fabric Whitener
Machine wash
Gentle on Hand
Detergent Powder
Mg. By
व्यापारिक पूछताछ आमंत्रित
7568787999
HP KaKa & Company
Rajsamand (Raj.) Customer Care No. 7568787999
hpkakancompany@gmail.com
हमारे अधिकृत विक्रेता :
राजसमंद :
- महालक्ष्मी किराणा स्टोर : 97999-30985
- देवनारायण किराणा स्टोर : 98298-92504
- एचएस ट्रेडर्स : 96948-16513
रेलमगरा :
श्री नागणेचा किराणा स्टोर : 99280-96170
केलवा :
न्यू बॉम्बे ट्रेडिंग : 77720-08888
आमेट :
श्री देवनारायण ट्रेडर्स : 96024-63254
रिछेड़ :
श्रीनाथ किराणा एवं डेयरी : 99839-96443
चारभुजा :
देवराज किराणा स्टोर : 81075-98399
उदयपुर :
विजेन्द्र ट्रेडिंग कंपनी : 77920-03333
नाथद्वारा :
वंदना ट्रेडिंग कंपनी : 70145-87513
देवगढ़ :
महालक्ष्मी प्रोविजन स्टोर : 96024-50455

जयवर्द्धन
पुरानी ख्वाहिशों को नई उम्मीदें
सादर अनुरोध
पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।
संपर्क : 94142-39648
जयवर्द्धन

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी
होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।
दिलीप जैन
मो. 9214384205 9602997715
जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच
राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर
संकल्प कोचिंग क्लासेज
रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली
:: संकल्प टीम ::
रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर
रतन सर-निदेशक
सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।
संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

जीवन ज्योति क्लिनिक एण्ड लेबोरेट्री
जीवन ज्योति डेन्टल क्लिनिक

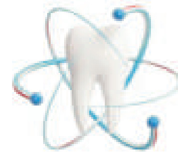

डॉ नीरज आचार्य
BHMS, CMS
Mob. 9460632683
E-mail : drneeraj13@gmail.com

डॉ. स्वाति आचार्य
BDS, दन्त रोग विशेषज्ञ
Mob. 9549146678
E-mail : drswatijoshi11@gmail.com

उपलब्ध सुविधाएं

- दांत-दाढ़ निकालना
- बत्तीसी बनाना
- दातों की केपिंग व सफाई
- दांतों की केपिंग व फिलिंग
- रूट केनाल का ईलाज

अन्य दांत संबंधित सभी प्रकार की बिमारियों का ईलाज

चावण्डा माता मंदिर के पास, शक्ति नगर, बस स्टेण्ड के पीछे, रेलमगरा जिला-राजसमंद (राज.)

श्री विनायक इण्डेन गैस

जनरल हॉस्पिटल के पास-रेलमगरा

रेलमगरा तहसील क्षेत्रवासियों के लिए खुश खबरी अब आपको नए गैस कनेक्शन के लिए इन्तजार करने व इधर-उधर जाने की जरूरत नहीं

बीपीएल एवं उज्ज्वला योजना सहित सभी प्रकार के कॉमर्शियल एवं घरेलु गैस कनेक्शन हाथों हाथ उपलब्ध। अन्य गैस एजेन्सियों से लिए गए कनेक्शन की ट्रांसफर सुविधा भी उपलब्ध।

इन बातों का रखें ध्यान

1. रबर की ट्यूब नियमित रूप से चैक करें 2 साल में या खराब होने से पहले बदले। 2. जरूरत नहीं होने पर चुल्हे व रेग्यूलेटर की नोब बंद करें।
3. सिलेंडर बदलते समय किसी प्रकार की आग पास में न हो। 4. गैस से संबंधित किसी भी दुर्घटना की आशंका होने पर कार्यालय में संपर्क करें।

प्रो. नारायण नायक - 9782692658, विजय गर्ग- 7240465861, फोन नं. 02952-267191

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To